चकमक

अगस्त, 2000

बाल विज्ञान पत्रिका

रु. 10.00

गरजने वाले बादल

यहाँ इन चित्रों में गरजने वाले बादल बनने की प्रक्रिया दिखाई गई है।

अन्दर पेज नम्बर 6 पर पढ़ो लेख "बादल तरह-तरह के"।

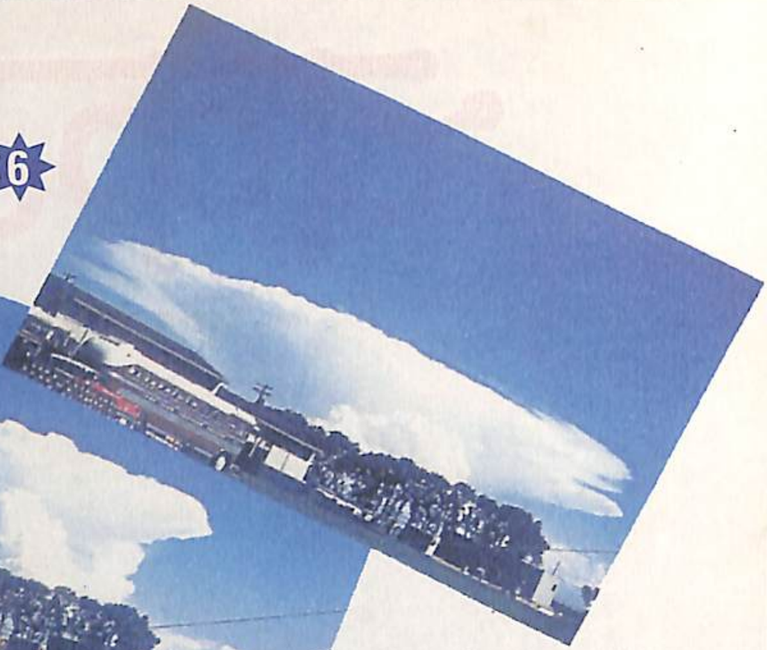

6

5

4

3

2

1

चित्र 1-2 : गर्म हवा से पानी के कण भाप बनकर 16 किलोमीटर से भी अधिक ऊपर तक उठ जाते हैं।

चित्र 3 : भाप ठण्डी होकर ज़्यादा घनी हो जाती है। फिर भाप पानी और बर्फ के कणों में बदल जाती है।

चित्र 4-5 : हवा के दबाव से बर्फ के कण लगभग 12 किलोमीटर की ऊँचाई पर आकर फैलने लगते हैं और बादलों का रूप ले लेते हैं।

चित्र 6 : फैलते-फैलते ये बादल विशाल छतरीनुमा रूप धारण कर लेते हैं। और कभी-कभी ये गरजने वाले बादल बरस भी पड़ते हैं।

एकलव्य का प्रकाशन

चकमक

बाल विज्ञान पत्रिका

अगस्त, 2000 के 179 वें अंक में

कहानी

32 ✱ बादल बरसे

कविताएँ

2 ✱ लेकिन. . .
20 ✱ पानी का मौसम
40 ✱ बादलों के मेले

रोचक शृंखला

14 ✱ खेल दुनिया भर के : वॉली बॉल

हर बार की तरह

2 ✱ इस बार की बात
22 ✱ वर्ग पहेली
38 ✱ माथापच्ची

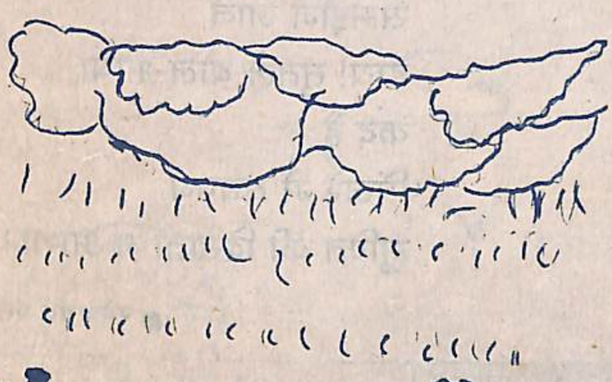

रजनी, तीसरी, भोपाल, म. प्र.

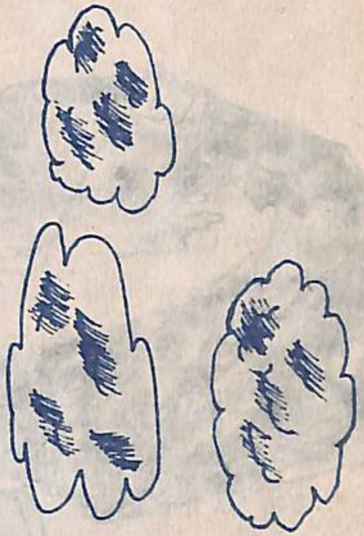

बारिश का मौसम हो या कोई और, बादल तो आसमान में कभी भी देखे जा सकते हैं। तरह-तरह के बादल, अगल-अलग आकार के अलग-अलग रंग के। तुमने बादल तो बहुत देखे होंगे लेकिन किस तरह के बादल मौसम के बारे में क्या कहते हैं? जानना चाहते हो तो पढ़ो पेज 6 से 'तरह-तरह के बादल'।

मेरा पन्ना

तुम्हारे पन्नों में तुम्हारी रचनाएँ और तुम्हारे चित्र : पृष्ठ 3 से 5 और 17 से 19 पर

धारावाहिक

23 ✱ प्यारा कुनबा : 6

और भी बहुत कुछ

12 ✱ तुम भी बनाओ : फूल
27 ✱ बाल–साहित्य
30 ✱ गीत–संगीत : 1
37 ✱ चकमक समाचार

आवरण : *क्युमुलोनिम्बस बादल* यह चित्र 'वेदर एंड इट्स वर्क' से साभार।

एकलव्य एक स्वैच्छिक संस्था है जो शिक्षा, जनविज्ञान एवं अन्य क्षेत्रों में कार्यरत है। चकमक, एकलव्य द्वारा प्रकाशित अव्यावसायिक पत्रिका है। चकमक का उद्देश्य बच्चों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति, कल्पनाशीलता, कौशल और सोच को स्थानीय परिवेश में विकसित करना है।

इस बार की बात . . .

● अखिलेश बिसेन, छठवीं, बारासिवनी, म. प्र.

लेकिन .....

लो खुल गए
स्कूल लेकिन
फिर वही बस्ते का रोना,
ढेर-सी
कॉपी-किताबें
पीठ पर उनको है ढोना।

सब जा रहे
स्कूल लेकिन
लग रहे हैं टट्टू,
खो गए
इनमें ही सारे
फूल-तितली, खेल-लट्टू।

लोग कब
समझेंगे जाने
हाय! तुतले बोल-भाषा,
कैद है
पिंजरे में बचपन
मुक्ति की दिखती न आशा।

● रमेशचंद्र पंत

चकमक
मासिक बाल विज्ञान पत्रिका
वर्ष-16 अंक-2 अगस्त, 2000

सम्पादन: विनोद रायना, राजेश उत्साही, कविता सुरेश, टुलटुल विश्वास
विज्ञान परामर्श: सुशील जोशी
वितरण: कमल सिंह, मनोज निगम, अशोक रोकड़े
सहयोग: राकेश खत्री, सुशील शुक्ल

पत्र/चंदा/रचना भेजने का पता
एकलव्य
ई-1/25
अरेरा कॉलोनी,
भोपाल - 462 016
(म. प्र.)
फोन : 563380

कवर का काग़ज़ : यूनीसेफ के सौजन्य से

चंदे की दरें

एक प्रति :	10.00 रुपए
छमाही :	50.00 रुपए
वार्षिक :	100.00 रुपए
दो साल :	180.00 रुपए
तीन साल :	250.00 रुपए
आजीवन :	1000.00 रुपए

सभी में डाक ख़र्च हमारा।

चंदा, मनीआर्डर/ड्रॉफ्ट/चेक से एकलव्य के नाम पर भेजें। भोपाल से बाहर के चेक में बैंक चार्ज 15.00 रुपए अतिरिक्त जोड़ें।

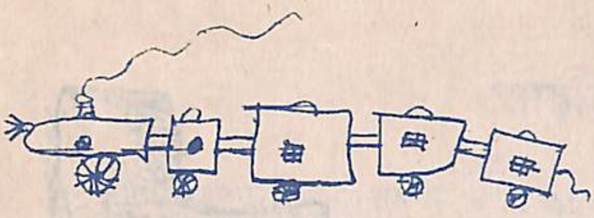

● अक्षय वागेला, चार वर्ष, इन्दौर, म. प्र.

हमारी मैडम

मैं पाँचवीं कक्षा में पढ़ती थी। तब मैं गर्ल्स हाई स्कूल में पढ़ती थी। वहाँ की मैडम अच्छी नहीं थी, वो गालियाँ बहुत बोलती थी। हमारी क्लास टीचर का नाम डोली था। उसकी एक आँख नहीं थी। वो चश्मा पहनती थी। हम शांत बैठकर किताब पढ़ते तो भी कहती यहाँ पढ़ने आए हो कि नाचने आए हो। ऐसा डाँटकर कहती। हमें बहुत बुरा लगता था। हमने उसका नाम शिवानी रखा था। जब भी वो क्लास में आती तो हम मन में उसको शिवानी कहते। वो पाठ पढ़ाती तो पाठ पढ़ लेती, कुछ समझाती नहीं। हमें पाठ में कुछ समझ नहीं पड़ता। ऐसा करते-करते वार्षिक परीक्षा आ गई। तब उसको समझ में आया कि ये बच्चे अच्छे थे इनको हमें प्यार से बुलाना था। हमारा आखरी पेपर था तो वो हमें बेटा, बेटा करके बुलाती तब हमारे मन में लगा की पहले तो डाँटती थी अब क्या बेटा करती है। हमारा रिजल्ट आया, हम दाखिला निकालने गए। तब मैडम बोली तुम अच्छे बच्चे हो, तुम दूसरे स्कूल में मत जाओ। पर हमने उसकी एक न सुनी और दूसरे स्कूल शारदा में गए। वो स्कूल हमें बहुत अच्छा लगा।

● अंकिता पंडया कलुभाई, पावरा, गुजरात

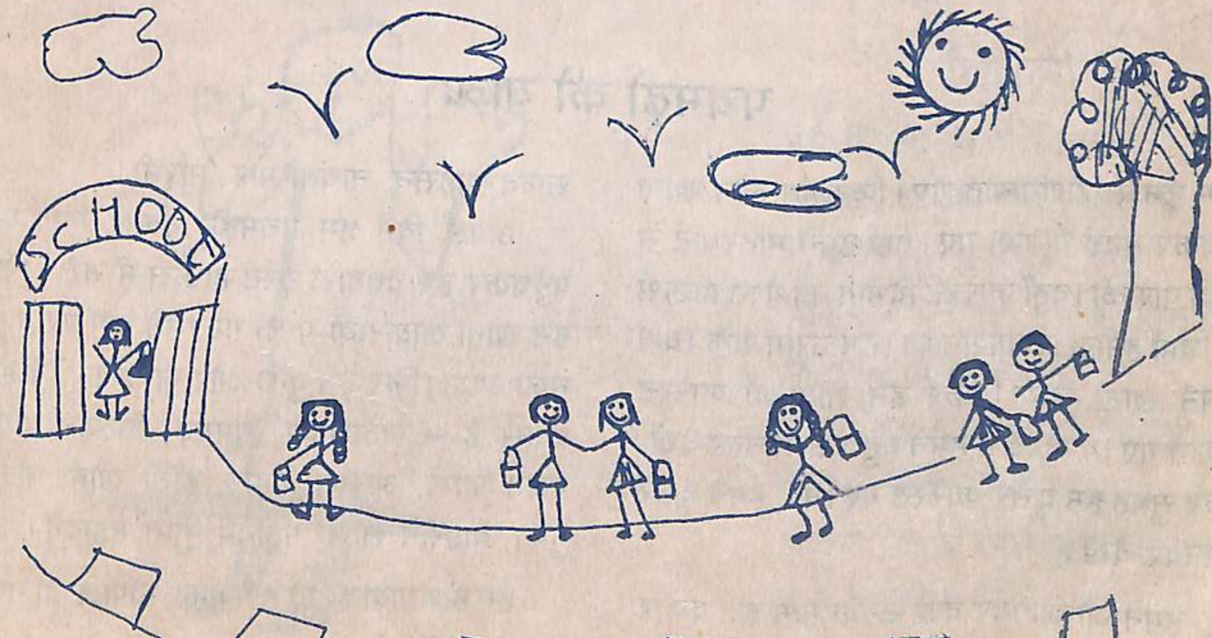

● सोनी देवी, आठ वर्ष, इलाहाबाद, उ. प्र.

मेरा पन्ना

पार्क की बातें

जब हमारी सोसाईटी में पार्क बनना शुरू हुआ तो हमें बहुत खुशी हुई। एक दिन हमने देखा कि पार्क बनके तैयार हो गया है तो और भी खुशी हुई। हमने सुना था इस पार्क में झूले भी लगेंगे। बहुत महीने बीत गए लेकिन झूले नहीं लगे तो हमें बहुत बुरा लगा।

मैं एक बार अपने दोस्तों के साथ क्रिकेट खेल रहा था तो सेक्रेटरी अंकल ने आकर हमारा बैट छीन लिया। और गुस्से में बोले, 'ये पार्क क्रिकेट खेलने के लिए थोड़े ही बना है। देख नहीं रहे हो सारी घास खराब हो गई है।' और वह अंकल हमारा बैट भी ले गए। हम बच्चों को बहुत गुस्सा आया कि पार्क में खेलने नहीं देते हैं तो बनाते क्यों हैं?

● शिवांक, तीसरी, दिल्ली

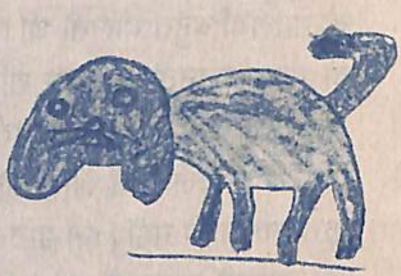

● धवल वागेला, पाँच वर्ष, इन्दौर, म. प्र.

पचमढ़ी की यात्रा

हम ट्रेन से होशंगाबाद गए। फिर हम लोग खाना खाकर मढ़ई निकल गए। वहाँ हमने मोटरबोट से नदी पार की। वहाँ फारेस्ट विभाग का गेस्ट हाऊस है। वहाँ हमारा रिजर्वेशन था। हम उसमें रुके। वहाँ हमने खाना खाया। फिर हम शाम को फारेस्ट देखने गए। फारेस्ट में हमने बहुत से जानवर देखे। फिर सुबह हम दूसरे फारेस्ट गए। वहाँ हमने दूसरे जानवर देखे।

हमने जो जानवर देखे उनके नाम इस प्रकार हैं – चौसिंगा, काला हिरण, सांभर, हिरण, चीतल, भालू, साही, नील गाय, कबरबिज्जू, काला और सफेद बाईसन, नाचता मोर, मोरनी।

अगले दिन हम पचमढ़ी निकल गए। वहाँ पहुँचकर हम देवदारू गेस्ट हाऊस में रुके। फिर हम खाना खाकर बी-फाल गए। हमें वहाँ पर बहुत मजा आया। फिर हम कुछ और जगह गए, वे इस प्रकार हैं – जटाशंकर, धूपगढ़, चिल्ड्रन पार्क, रजत फाल, अप्सरा विहार, हाँडी खोह, पांडव गुफा, बाईसन लॉज, महादेव, गुप्त महादेव।

हम होशंगाबाद होते हुए वापस भोपाल आ गए। इस यात्रा में हमें बहुत मजा आया।

● हर्षल कुमठ, पहली, भोपाल, म. प्र.

साइकिल की चोरी

यह बात लखनऊ की है। तब मैं 7 वर्ष का था। मेरे लिए एक साइकिल खरीदी गई थी। मैं बहुत खुश हुआ। एक दिन साइकिल की रेस हो रही थी। मैं भी उसमें भाग लेने के लिए वहाँ गया। मेरी साइकिल में ताला नहीं था, इसलिए मैंने साइकिल पेड़ के पास रख दी। फिर मैं नाम लिखवाने गया। जो नाम लिखता था उसने कहा, 'अपना-अपना पेन लाओ और कार्ड भरो।' मैं पेन लाने के लिए साइकिल के पास पहुँचा। देखा तो साइकिल नहीं है। मैं रोते-रोते घर गया। सारी घटना पापा को बताई। पापा ने कहा, 'हमारे घर में जो दरोगाजी रहते हैं उनसे कहो कि साइकिल ढूँढ दें।'

मैंने उनसे कहा, तो दरोगाजी उठे और कहा,'चलो साइकिल ढूँढें।' हम लोग पुलिस स्टेशन गए और कम्प्लेन लिखवाई। इंस्पेक्टर ने दरोगा को भेजा दिया। मैं और दरोगा जी भी साइकिल ढूँढने निकल पड़े। एक जगह पर एक लड़का और एक लड़की मेरी साइकिल पर बैठकर कहीं जा रहे थे। हमने उनको रोका और पूछा कि साइकिल कहाँ से पाई। लड़की ने कहा, 'पेड़ के पास।' मैंने पूछा, 'साइकिल क्यों उठाई।' लड़की ने कहा, 'बेचने के लिए।'

दरोगाजी ने कहा, 'जेल में डाल दूँ कि साइकिल चोरी की है। माँ-बाप कहाँ है।' दोनों ने रोते हुए कहा, 'मर गए, पर हमें जेल में मत डालो।' मैंने उनसे साइकिल छीन ली। तब देखा कि साइकिल पंचर है। दरोगाजी उनको मेरे घर में ले आए। पापा ने कहा, 'इनको छोड़ दो।'

● कृष्णा कुमार, 11 वर्ष, फैज़ाबाद उ.प्र.

● शिवानी, चार वर्ष (जगह का नाम नहीं लिखा)

तितली

रंग बिरंगी प्यारी तितली
सबके मन को भाती तितली
फूल-फूल पर बैठती
मौसम को रंगीन बनाती तितली
फूलों से बातें करती
हमारे मन को लुभाती तितली
तितली का घर है फूल
तितली से है शान फूल की
झूम-झूमकर अपने पर
इतराती तितली

● अंजली मुजाल्दा, धार, म.प्र.

बादल-तरह तरह के

बारिश का मौसम हो तो बादल तो होंगे ही, है न। लेकिन तुमने देखा होगा कि बारिश के मौसम के अलावा भी कई बार आसमान में बादल नज़र आते हैं। तरह-तरह के बादल - कभी झक्क सफेद तो कभी काले-काले। कभी ललछौंहा, तो कभी सुनहरे। कभी कुत्ता-बिल्ली और हाथी के आकार के तो कभी रूई की फाहों की तरह के।

तुमने यह भी देखा होगा कि सब तरह के बादलों से बारिश नहीं होती है। लेकिन कभी सोचा है कि कितने तरह के होते होंगे बादल? बादलों को उनके आकार ऊँचाई और दिखावट के आधार पर वैज्ञानिक कई समूहों में बाँटते हैं। पर इन सब में से तीन प्रकार के समूह सबसे खास होते हैं। ये हैं सिर्रस या रेशेदार बादल, क्युमुलस या कपासी बादल और स्ट्रेटस या परत की तरह फैले बादल।

ये तो अंग्रेज़ी और हिन्दी के बहुत कठिन नाम हो गए। चलो, हम चित्र देखकर इन बादलों की खासियत को समझते हुए इन्हें पहचानते हैं।

1. **ये हैं सिर्रस या रेशेदार बादल।** मतलब सीधा-सादा यह कि इनमें घने रेशे जैसे दिखाई देते हैं। पतले-पतले, घुंघराले या हल्के लहरदार बाल या रेशे जैसे गुच्छे जो साफ नीले आसमान में तैरते दिखते हैं।

इस तरह के बादल आमतौर पर बर्फ के कणों (क्रिस्टल) से बने होते हैं। ये वायुमण्डल में बहुत ऊपर, परतों में रहते हैं, लगभग 20,000 से 60,000 फीट की ऊँचाई पर। ये खुद तो बारिश नहीं लाते पर ये बताते हैं कि कहीं तेज़ आँधी-तूफान चल रहा है।

सिर्रस या रेशेदार बादल

2. क्युमुलस या कपासी बादल क्या होते हैं, यह तो तुम नाम से ही समझ गए होगे। ये कपास के ढेरों की तरह दिखने वाले बादलों का नाम है। इनकी तली गहरे रंग की और सपाट-सी होती है। जबकि ऊपरी हिस्सा गोल गुम्बद के आकार का और चमकदार, सफेद होता है।

आमतौर पर ये 1000 से 45,000 फीट की ऊँचाई तक पाए जाते हैं। कभी-कभी ये हवा के कारण बहकर एक-दूसरे से मिल जाते हैं। और इस तरह मिलकर घने, बारिश लाने वाले या गरजने-चमकने वाले बादलों का रूप ले लेते हैं। तब इन्हें क्युमुलोनिम्बस बादल कहते हैं।

क्युमुलस या कपासी बादल

3. स्ट्रेटस या फैले हुए बादल तब बनते हैं जब ढेर सारे कपासी बादल मिलकर एक निरंतर परत बना लेते हैं। ये कपासी बादल की तुलना में कहीं ज़्यादा काले और घने नज़र आते हैं। ये बादल वायुमण्डल में काफी नीचे उड़ते हैं, 8000 फीट के नीचे ही।

कभी-कभी तो इनका नीचे का तल ज़मीन से सिर्फ 500 मीटर की ऊँचाई पर ही होता है। ये बादल अक्सर बूँदाबाँदी लाते हैं।

स्ट्रेटस या फैले हुए बादल

तो ये थे तीन मुख्य प्रकार के बादलों के समूह। बाकी ज़ितने भी तरह के बादल हम आसमान में देखते हैं, वो इन तीन तरह के बादलों के मिले-जुले प्रभाव से ही बनते हैं।

मिले-जुले बादल

इन मिले-जुले बादलों को पहचानना भी मज़ेदार होगा, क्योंकि कई बार इन्हें देखकर हम यह बता सकते हैं कि आने वाला मौसम कैसा होने वाला है। इनकी बनावट, उड़ने की ऊँचाई पर ये उड़ते हैं और उड़ने या बहने के तरीके को देखकर ही मौसम-विज्ञानी आगे के मौसम की भविष्यवाणी कर पाते हैं। तो आओ हम भी देखें मिले-जुले बादल।

सिर्रोक्युमुलस

सिर्रोक्युमुलस या रेशेदार-कपासी बादल

20,000 से 60,000 फीट की ऊँचाई पर बहने वाले ये बादल सफेद रेशेदार और कपासी बादलों के ढेरों का मिला-जुला रूप दिखाई देते हैं। देखने में ऐसा लगता है जैसे इनमें दाने बने हुए हैं। कभी-कभी ये दाने एक-दूसरे में घुलते हुए से दिखते हैं। और कभी ये दाने सलीके से जमे हुए दिखते हैं। आमतौर पर ये बादल गर्म हवा की खबर लाते हैं। हवाओं से सामना होने पर ये खुदऔर घने होकर सिर्रोस्ट्रेटस बादलों का रूप ले लेते हैं।

सिर्रोस्ट्रेटस या रेशेदार फैले हुए बादल

जब रेशेदार कपासी बादलों का सामना तेज़ तूफानी हवाओं से होता है तो वे रेशेदार फैले हुए बादलों में बदल जाते हैं। ये बादल पतली परत के रूप में होते हैं जो सूर्य या चाँद की रोशनी के आसपास एक घेरा सा बनाते हैं। यह घेरा दरअसल बर्फ के बारीक कणों के कारण बंनता है। 20,000 से 60,000 फीट की ऊँचाई में उड़ने वाले ये बादल अगर घने हो जाएँ तो अगले 24 घण्टों के अन्दर ही बारिश होगी, ऐसी सम्भावना होती है।

सिर्रोस्ट्रेटस

एल्टोक्युमुलस
या खास ऊँचाई वाले कपासी बादल

जब कपासी बादल 8000 से 20,000 फीट की ऊँचाई पर बड़े-बड़े सफेद या स्लेटी, गोलाकार या बेलनाकार पिण्डों के रूप में बहते हैं तो ये एल्टोक्युमुलस बादल कहलाते हैं। ये पानी की बूँदों से बने होते हैं। कभी-कभी ये बारिश का संदेशा लाते हैं। खासकर अगर इनके कुछ पिण्ड अपने आस-पास के पिण्डों की तुलना में अचानक बहुत ऊपर उठने लगें तो समझो कि गरज-चमक के साथ आँधी आ सकती है।

एल्टोक्युमुलस

एल्टोस्ट्रेटस
या खास ऊँचाई के फैले हुए बादल

8000 से 20,000 फीट की ऊँचाई वाले ये बादल जब फैलते हैं तो पूरे आसमान को ढक लेते हैं। आमतौर पर ये इतने झीने होते हैं कि इनमें से सूर्य का प्रकाश आता रहता है। मगर जब ये बादल ज्यादा मात्रा में हों तो देर तक चलने वाली बारिश या तुषारापात लेकर आते हैं।

एल्टोस्ट्रेटस

निम्बोस्ट्रेटस
या निम्बस बादल

जब एल्टोस्ट्रेटस बादल धरती के बहुत करीब आ जाते हैं तो वे बदलकर निम्बस बादल बनाते हैं। ये 8000 फीट से कम ऊँचाई के बादल इतने घने होते हैं कि दिन में भी अंधेरा–सा कर देते हैं। ये भी लगातार चलने वाली बारिश या तुषारापात करवाते हैं। जिसके कारण इनका आकार साफतौर पर दिखाई भी नहीं देता।

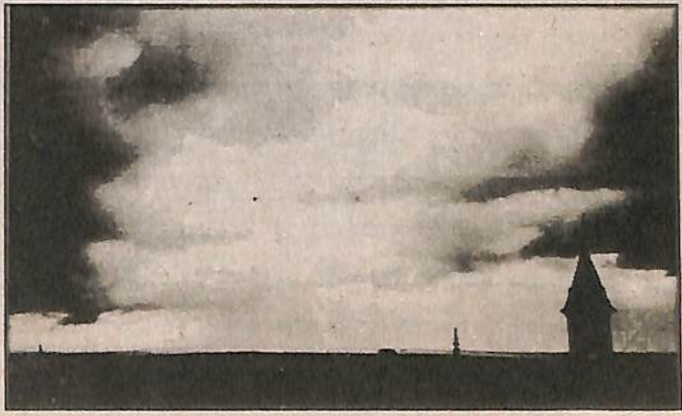

निम्बोस्ट्रेटस

बादल बनने के कुछ तरीके

यहाँ हम बादलों के बनने के तीन तरीकों पर विचार करेंगे। एक गर्म और ठण्डी हवा के मिलने पर, दूसरा धरती या समुद्र के पानी के गर्म हो जाने पर और तीसरा बहती हवा के पहाड़ों से टकराने पर।

1. जब कभी गर्म हवा का कोई झोंका ठण्डी हवा से टकराता है तो उसे ठण्डी हवा की एक तिरछी दीवार का सामना करना पड़ता है। इस दीवार के परे की हवा न सिर्फ तुलना में ठण्डी होती है बल्कि उसका घनत्व भी अलग ज्यादा होता है। इस रुकावट के कारण गर्म हवा ऊपर की ओर उठने लगती है। इस तरह ऊपर उठते हुए जब वह द्रवीकरण स्तर की ऊँचाई पर पहुँच जाए तो उस गर्म हवा में भाप के रूप में मौजूद नमी ठण्डी होकर पानी की बूँदों के रूप में द्रवित हो जाती है। और तब बन जाते हैं बादल।

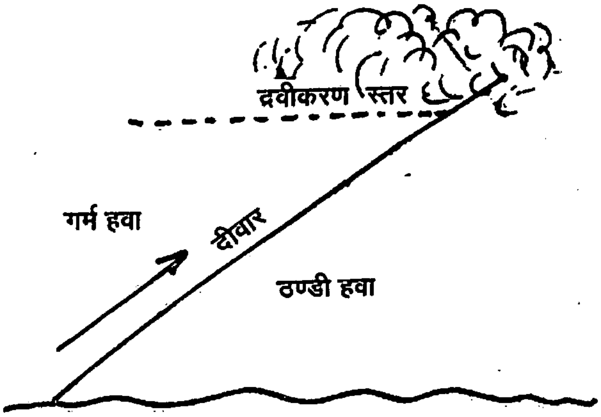

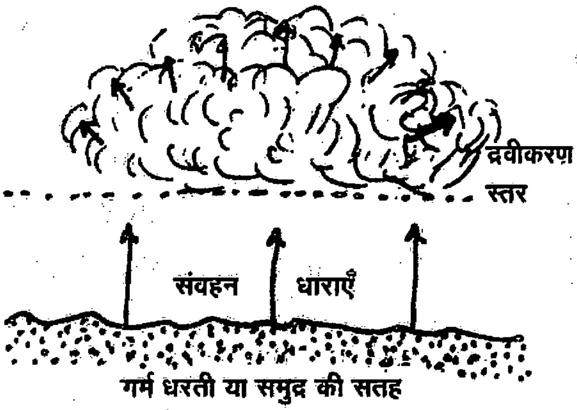

2. दूसरे तरीके में धरती या समुद्र की सतह की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। जब धरती या समुद्र की सतह गर्म हो जाए तो उसके ऊपर की हवा भी गर्म हो जाती है। यह गर्म हवा ठण्डी हवा की तुलना में कम घनी होती है और इसीलिए हल्की होती है। यह हवा ऊपर की ओर उठती है। द्रवीकरण स्तर तक पहुँचकर इसमें मौजूद नमी भी पानी की बूँदों में बदल जाती है। और बादल बन जाते हैं।

3. तीसरी स्थिति तब आती है जब नम हवा बहते-बहते किसी पहाड़ से टकरा जाए। तब पहाड़ की दीवार के कारण वह ऊपर की ओर उठती है। फिर द्रवीकरण स्तर पर पहुँचकर उसकी नमी पानी की बूँदों में बदल जाती है। इस तरह से जब बादल बनते हैं तो अक्सर बारिश भी होती है। ऐसे में मजेदार बात यह होती है कि पहाड़ के एक तरफ तो अच्छी बारिश होती है पर दूसरी तरफ कम। इस दूसरे कम बारिश वाले इलाके को वृष्टि छाया क्षेत्र कहते हैं।

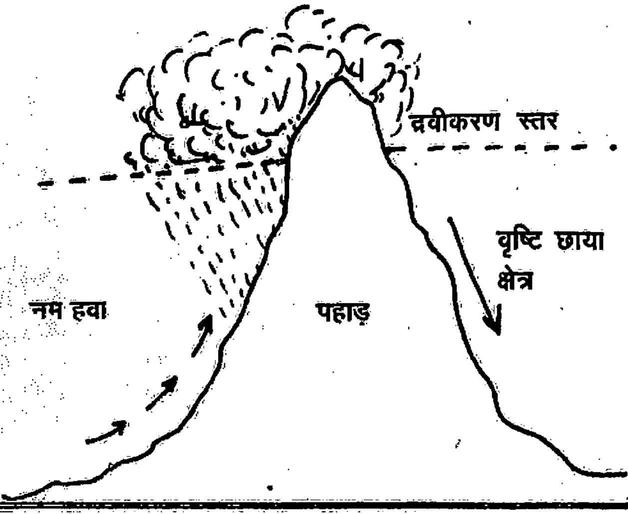

स्ट्रेटोक्युमुलस

स्ट्रेटोक्युमुलस
या फैले हुए कपासी बादल

जब कभी किसी इलाके में ठंडी हवा चलती है तो अनियमित सलवटों और परतों की एक लम्बी-चौड़ी, दूर तक दिखने वाली छतरी-सी बन जाती है। 8000 फीट के नीचे बनने वाली यह छतरी स्ट्रेटोक्युमुलस बादलों की है। इनमें सफेद और गाढ़े रंग के धब्बे दिखते हैं। ये कभी-कभी हल्की बारिश या तुषारापात कर सकते हैं।

क्युमुलोनिम्बस बादल

गर्मी के दिनों में धरती या समुद्र के ऊपर से उड़कर आने वाले बादल लगभग हमेशा ही आँधी-तूफान और भारी वर्षा लेकर आते हैं। 1000 से 60,000 फीट तक उड़ने वाले ये बादल कभी-कभी ओले भी बरसाते हैं।

क्युमुलोनिम्बस

तो ये थी बादलों की कहानी। अब आकाश में साल भर में बादलों को देखकर पहचानने की कोशिश करना। और देखना कि पहचानकर मौसम के बारे में कोई भविष्यवाणी कर पाए कि नहीं। हमें चिट्ठी लिखकर बताना कि तुमने क्या देखा और क्या बूझा।

— चित्र एवं जानकारी : गाइड टू द फिज़ीकल वर्ल्ड व टाइम लाइफ सीरीज़ की 'वेदर' से साभार

गुलाब के फूल

गुलाब के फूल तो तुम सबने देखे ही हैं। कई रंगों और कई आकार के सुन्दर गुलाब किसे अच्छे नहीं लगते। इस बार हम यहाँ गुलाब के फूल बनाने के बारे में बता रहे हैं। इसके लिए रंगीन कागज़, परकार, पेंसिल, गोंद, कैंची, थोड़ा पतला और थोड़ा मोटा तार, आलपिन आदि जुगाड़ लो।

1. सबसे पहले कागज़ पर एक गोला बनाकर उसे काट लो। अलग-अलग आकार के ऐसे तीन-चार गोले काट लो।

वैसे तो तुम गोले का आकार अपने हिसाब से भी ले सकते हो। अगर तुम्हारे पास परकार हो तो ढाई इंच व्यास का एक गोला बनाओ और दूसरा दो इंच व्यास का और तीसरा डेढ़ इंच व्यास का। अगर तुम्हारे पास परकार नहीं है तो तुम कटोरी या बोतल के ढक्कन का उपयोग भी कर सकते हो।

चित्र–1

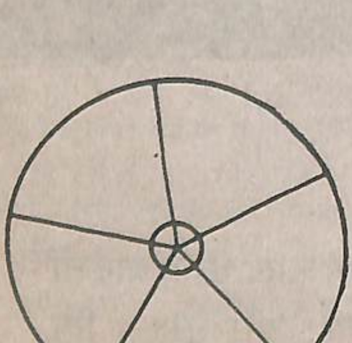

चित्र–2

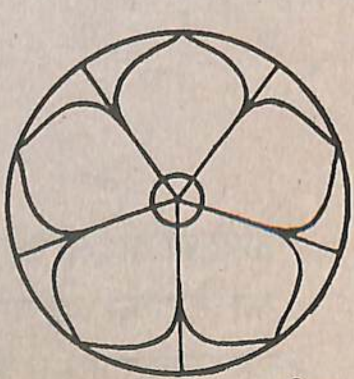

चित्र–3

2. काटे हुए गोलों को पेंसिल से पाँच बराबर भागों में बाँट लो।

3. अब चित्र तीन की तरह गोले पर पँखुड़ियों की डिज़ाइन बना लो। इसी तरह सभी गोलों पर डिज़ाइन बना लो।

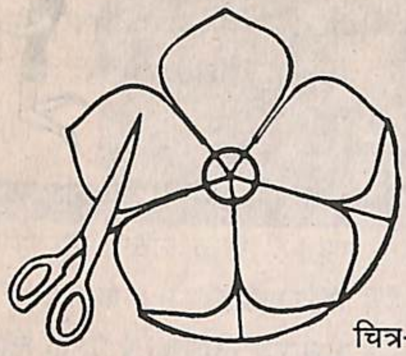

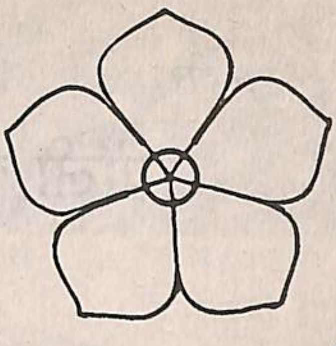

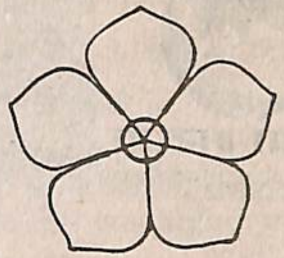

चित्र–4

4. इन गोलों में से पँखुड़ियों के ऊपर का हिस्सा काटकर अलग कर दो। इस बात का ध्यान रखना कि बीच के छोटे गोले से थोड़ी दूर तक पँखुड़ियाँ जुड़ी रहना चाहिए।

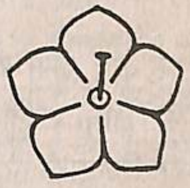

चित्र–5

5. इसी तरह से सभी पँखुड़ियों को काट लो। फिर सभी अलग-अलग आकार की पँखुड़ियों को एक के ऊपर एक रख लो। सबसे छोटी पँखुड़ी सबसे ऊपर और सबसे बड़ी सबसे नीचे रखना। और बीच वाले छोटे गोले में एक तार का टुकड़ा या आलपिन पिरो लो।

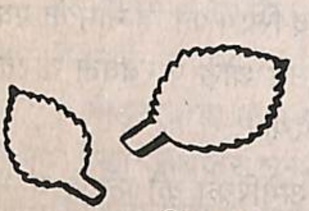

चित्र–6

6. इस तरह फूल तो बन जाएगा अब बनाना है पत्तियाँ। चित्र–6 में दिखाई गई पत्तियों की डिज़ाइन की तरह पत्तियाँ कागज़ से काट लो।

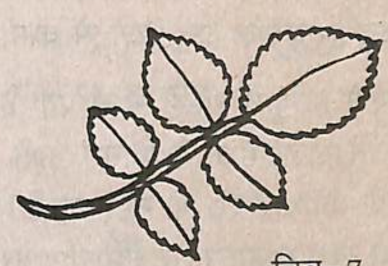

चित्र–7

7. पाँच-पाँच पत्तियों को एक तार में चिपका लो।

8. बस फूल तो पहले बना ही लिया था। फूल के बीचोंबीच जो तार पिरोया था उसे एक थोड़े मोटे तार के साथ लपेटकर अच्छे से कस दो। फिर इसी तार से पत्तियों को भी लपेट दो। अंत में इस तार पर हरे रंग का कागज़ गोंद लगाकर चिपका दो।

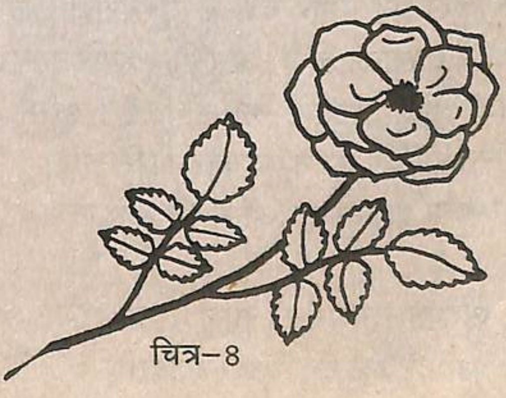

चित्र–8

इस बार

वॉली बॉल

क्रिकेट, फुटबाल, हॉकी, जैसे खेल खेलने का मज़ा ही कुछ और है। तीनों खेलों में ही एक-एक टीम में ग्यारह-ग्यारह खिलाड़ी होते हैं। इतने सारे खिलाड़ियों का तालमेल के साथ खेलना रोमांच और बढ़ा देता है। बस इन खेलों में एक मुश्किल है कि इनके लिए एक लम्बा चौड़ा मैदान चाहिए। गाँवों में तो फिर भी हम एक मैदान की जुगाड़ कर सकते हैं। लेकिन शहरों में तो इतना बड़ा मैदान मिलना ज़रा मुश्किल है। लेकिन कुछ और टीम-खेल भी हैं जिनके लिए बस आँगन-भर मैदान की ही ज़रूरत होती है। और जिनमें रोमांच, मज़ा भी क्रिकेट, फुटबॉल या हॉकी से कम नहीं होता।

ऐसे ही कुछ खेलों में से एक है वॉली बॉल। यह उन खेलों में से है जिनमें भारी भरकम खेल सामग्री की ज़रूरत भी नहीं पड़ती। बस एक गेंद हो! दो खंभे गाड़कर नेट लगाकर इसे बड़े मज़े से खेल सकते हैं।

वाली बॉल ऐसे तो एक विदेशी खेल है लेकिन आजकल यह हमारे देश के दूरदराज तक के गाँवों में खेला जाता है। और फिर हर स्तर पर इसकी प्रतियोगिताएँ भी होती हैं। इसमें महारत हासिल करने पर कोई भी खिलाड़ी बड़ी-बड़ी प्रतियोगिताओं में भी भाग ले सकता है।

अब से लगभग सौ साल पहले इसे अमेरिका के एक व्यक्ति विलियम जी मॉर्गन ने बनाया था, खास अमेरिका के व्यापारियों के लिए। क्योंकि दिनभर व्यस्त रहने के बाद उन्हें कम समय में क्लबों के अंदर ही खेले जाने वाले मनोरंजक खेल की ज़रूरत महसूस होती थी। कोई ऐसा खेल जो उन्हें संतुलित व्यायाम भी दे सके। तब इसका नाम था –मिनटोनेट।

यह खेल जल्दी ही अमेरिका में बहुत लोकप्रिय हो गया। कुछ दिनों बाद स्प्रिंग फील्ड नाम के एक अमेरिकी व्यक्ति ने इसमें थोड़े फेरबदल करके इसे वॉली बॉल नाम दिया।

बाद में यह खेल अमेरिका की फौजों में भी बहुत लोकप्रिय हुआ। द्वितीय विश्वयुद्ध के

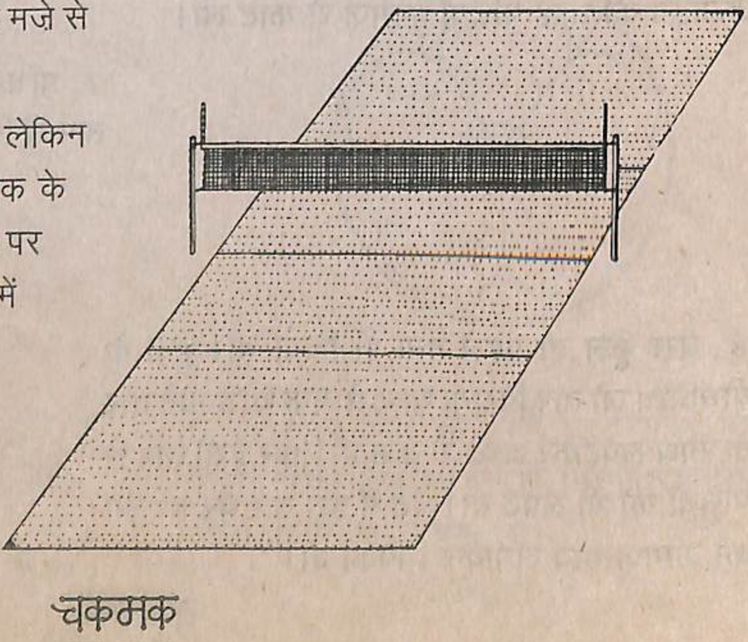

समय इन्हीं फौजों के मार्फत यह जापान में प्रचलित हुआ। और फिर पूरे एशिया में यह खेल लोकप्रिय हो गया।

चलो अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में इससे जुड़े मापदण्डों पर विचार करते हैं। शुरुआत गेंद से करते हैं। इस खेल में फुटबॉल जैसी गेंद ही इस्तेमाल करते हैं। इसकी परिधि 65–67 से. मी. होनी चाहिए और वज़न 260 ग्राम से 280 ग्राम के बीच होना चाहिए।

नेट एक मीटर चौड़ा और साढ़े नौ मीटर लम्बा होता है। इसे दो खम्भों से 4 फीट 8 इंच की ऊँचाई पर बाँधते हैं।

अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं में इसके मैदान की नाप भी निश्चित होती है। मैदान 18 मीटर लम्बा और 9 मीटर चौड़ा होना चाहिए। मैदान को बीच से एक रेखा खींचकर लम्बाई में दो भागों में बाँटा जाता है। इसी रेखा के ऊपर नेट लगाया जाता है।

मैदान में एक तरफ 3×3 मीटर तथा दूसरी तरफ 2×2 मीटर का वर्ग होता है। यह क्षेत्र सर्विस के लिए निश्चित होता है। बीच की रेखा से दोनों तरफ दोनों पालों में 3–3 मीटर की दूरी पर एक रेखा होती है जिसे आक्रमण रेखा कहते हैं।

खेल की शुरुआत होती है टॉस से। टॉस जीतने वाली टीम मन चाहे पाले से खेल सकती है या फिर पहले सर्विस भी चुन सकती है।

दोनों टीमों की कोशिश रहती है कि उसके खिलाड़ी गेंद को दूसरे पाले में इस तरह डालें कि विरोधी टीम उसे वापिस न लौटा सके। और विपक्षी टीम की इस गलती पर उस टीम को एक अंक मिले। खेल इसी तरह चलता है। एक मैच पाँच सेटों का होता है। जो टीम पहले तीन सेट जीतती है वही विजेता टीम होती है। हर सेट के बाद दो मिनिट का विश्राम का समय होता है। चौथे और पाँचवें सेट में यह पाँच मिनिट भी हो सकता है।

हाँ, हर सेट के बाद टीमें अपना-अपना पाला बदल लेती हैं। लेकिन निर्णायक सेट में पाला बदलने के लिए टॉस होता है। इस सेट में पहले जो टीम आठ अंक बनाती है, उसे पाला फिर से बदलना होता है।

नेट के पार गेंद भेजने के लिए खिलाड़ी हाथ के अलावा शरीर का कमर के नीचे का कोई भी भाग इस्तेमाल नहीं कर सकता है। और न ही एक बार में लगातार दो बार गेंद छू सकता। हाँ, गेंद को विपक्षी टीम के पाले में पहुँचाने के लिए, अधिक से अधिक तीन खिलाड़ी गेंद को एक-एक बार छू सकते हैं।

हर सर्विस परिवर्तन के समय सर्विस करने वाली टीम के खिलाड़ी घड़ी की सुई चलने की दिशा में एक-एक स्थान घूम जाते हैं।

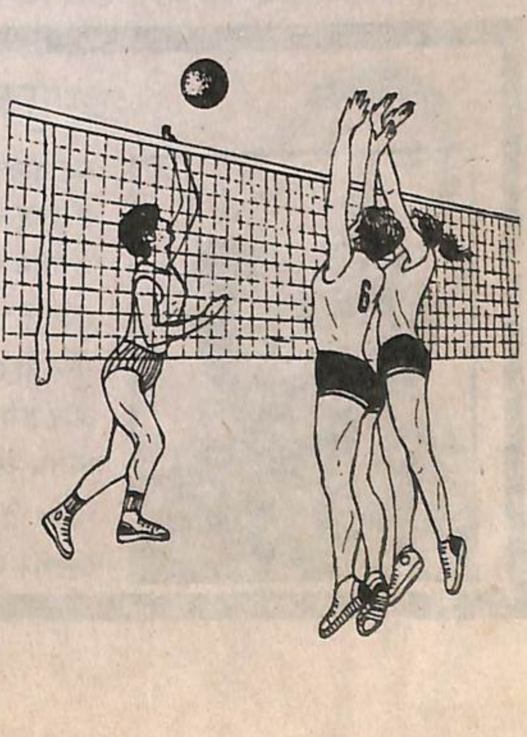

कभी-कभी ऐसी स्थितियाँ भी आती हैं जब निर्णायक सेट होता है और दोनों टीमें 14-14 अंकों के साथ बराबरी पर हों। आम स्थिति में जो टीम पहले 15 अंक स्कोर कर ले वह उस सेट को जीत लेती है। लेकिन आखिरी यानी निर्णायक सेट में ऐसी स्थिति में जो टीम पहले दो अंक बनाएगी वही विजेता टीम होगी। खेल अधिकतम 17 अंकों तक ही चलता है।

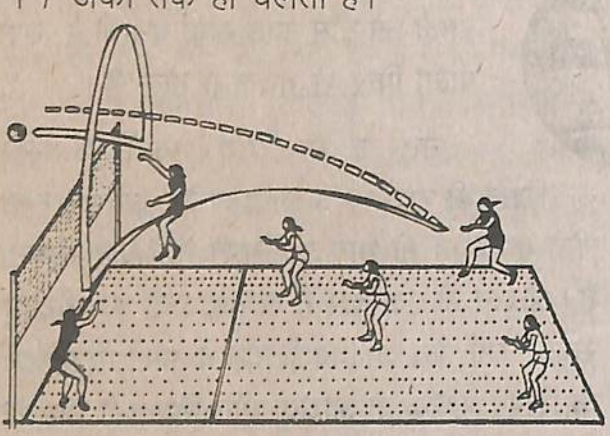

कभी मान लो ऐसी स्थिति आ जाए जब दोनों टीमों के 16-16 अंक हों। लेकिन खेल तो अधिकतम 17 अंक तक ही होता है इसलिए जो टीम पहले 17 वाँ अंक स्कोर करेगी, वही जीतेगी।

खेलों के बीच कई बार फाउल की स्थिति भी आती हैं। वॉली बॉल खेलते समय ऐसी स्थितियाँ अक्सर आती हैं जैसे गेंद को विरोधी टीम के पाले में भेजते समय गेंद दो बार दो खिलाड़ियों से नहीं छूना चाहिए। क्योंकि इस तरह गेंद को एक प्रयास में तीन बार छूने का नियम टूटता है।

कभी-कभी इस स्थिति में भी फाउल माना जाता है जब कोई खिलाड़ी आक्रमण रेखा के पीछे रहकर गेंद को दूसरे पाले में पहुँचाने के लिए प्रहार करता है जबकि गेंद की ऊँचाई नेट की ऊँचाई से ज़्यादा हो। विरोधी पाले में गेंद पहुँचाते समय एक बार में एक ही खिलाड़ी लगातार दो बार गेंद नहीं छू सकता।

तो ये थी वॉली बॉल के नियमों की जानकारी। वॉली बॉल खेलते समय कोई नई स्थिति बनेगी तो बड़ों से बातचीत करोगे ही! तुम चाहो तो हमें भी अपनी चर्चा में शामिल कर सकते हो, हमें पत्र लिखकर! किसी और खेल के बारे में भी जानकारी चाहिए हो तो वह भी हमें लिखना!

● प्रस्तुति : सुशील शुक्ल

गुरूजी नहीं रहे

यह अंक जब प्रेस में जा रहा था तभी हमें यह दुखद सूचना मिली। 30 जुलाई, 2000 को इन्दौर में जाने माने चित्रकार और गुरूजी के नाम से मशहूर श्री विष्णु दिनकर चिंचालकर का निधन हो गया। गुरूजी का चकमक से उसके आरम्भ से जुड़े रहे। सच तो यह है कि गुरूजी अपनी अनोखी कलादृष्टि के कारण सदा हमारे बीच रहेंगे। और हमारा उनका सम्बंध तो बना ही रहेगा। हम गुरूजी को अपनी विनम्र श्रद्धांजली अर्पित करते हैं।

जल्द ही चकमक में गुरूजी और उनकी कला पर सामग्री प्रकाशित करेंगे।

हमारे विद्यालय में घटी घटना

मैंने कक्षा पहली से आठवीं तक तो हमारे गाँव कवलाँ में ही उत्तीर्ण की। कक्षा नवमीं और दसवीं पास के गाँव भूती में ही उत्तीर्ण की। अब मैं दसवीं की बोर्ड की परीक्षा दे चुका हूँ।

मैं दसवीं कक्षा में पढ़ाई कर रहा था। तब हर वर्ष की भाँति इस वर्ष भी हमारे विद्यालय में कक्षा 6 से 10 तक का एक शिविर चल रहा था। कक्षा छठी से आठवीं तक तो सभी बच्चे अपना दिन का भोजन अपने साथ में लाते थे। किन्तु कक्षा नवमीं व दसवीं वाले सभी बच्चों के 7 ग्रुप (दल) बनाए थे। उनमें से 6 दल बच्चों के व 1 दल बच्चियों का था। प्रत्येक दल में 12-12 लड़के-लड़कियाँ थे। हमारे दल में भी कुल 12 छात्र थे। हमारे दल का दल नायक मैं ही था। इन्हीं में से एक दल को खाना बनाना होता था।

पहला ही दिन था। हम भोजन बनाने बैठे। लेकिन हममें से किसी को भी न तो आटा गूँथना आता था और न ही सब्जी बनानी आती थी। मैंने सभी से पूछा किन्तु सबने मना कर दिया कि हमें आटा गूँथना नहीं आता है। तब मैंने जैसे-तैसे आटा गूँथकर रोटियाँ तो बना लीं, किन्तु सब्जी बनानी शेष थी।

हममें से केवल एक छात्र को थोड़ी-थोड़ी सब्जी बनानी आती थी। उसने मुझसे आग्रह किया कि तुम भी मेरे पास ही बैठो। तब मैं उसके पास बैठ गया। वह छात्र आलू व टमाटर की सब्जी बनाने लगा। उसने चूल्हे पर बड़ा टोप रखा। उसमें आवश्यकतानुसार तेल डाला। चूल्हे के पास ही एक नीम का पेड़ था। चूल्हे पर रखे टोप के अन्दर डाला तेल बहुत गर्म हो गया था। छात्र ने सोचा कि समका (यह एक राजस्थानी शब्द है) आया या नहीं आया? यह पता लगाने के लिए उसने हाथ से थोड़े पानी को तेल में डालकर टोप पर ढक्कन रख दिया। तेल गर्म होने के कारण तेल में आग लग गई। जिससे वह छात्र डरकर दूर भाग गया।

मैंने धैर्य नहीं खोया। मैंने सोचा कि इस प्रकार से तो पूरे शिविर में आग लग जाएगी। तब मैंने जल्दी से छिली हुई लहसुन तेल में डाली और उसके ऊपर कटे हुए आलू। इनको टोप में डालकर सब्जी को चम्मच से हिलाया। जिससे मेरा हाथ भी जल गया था। सब्जी में डाली हुई लहसुन भी जल गई।

बाद में दल प्रभारी जब सब्जी देखने आए तब उन्होंने मुझसे पूछा कि क्या रमेश तुमने सब्जी की लहसुन जला दी। तब मैंने उनसे हँसी के रूप में कहा कि इसमें तो हमने लहसुन नहीं डाली है। तब अध्यापकजी भी हँस पड़े।

हमारे दल प्रभारीजी ने प्रधानाध्यापकजी को बताया। उन्होंने मुझे पुरस्कार दिया।

● **रमेश कुमार लोहार,**
कवलाँ, जालोर,
राजस्थान

● **ज्योति बिलारे,**
पाँचवीं, हरदा, म. प्र.

मधुमक्खी ने काटा

एक दिन मैं और मेरा छोटा भाई वरुण मधुमक्खी को परेशान कर रहे थे। तब वरुण ने कहा– देखो मैं कितनी मधुमक्खी मार गिराता हूँ, तुम मार सकते हो। मैंने कहा तुम अकेले ही मार सकते हो? मैं भी मार सकता हूँ। तब मैंने लकड़ी लेकर बहुत सारी मधुमक्खी मार डालीं। तभी वरुण ने मेरे हाथ से लकड़ी लेकर मधुमक्खी को मारा। तब मुझे मधुमक्खी आँख के जरा नीचे डंक मार गई। तब मेरी आँख सूज गई, पर दो दिन बाद वह वापस ठीक हो गई। वह दिन मुझे हमेशा याद रहेगा।

● जय पंडया, दोरा (भरुच) गुजरात

● सूर्यांश, पहली, इन्दौर, म. प्र.

बरसात

जब चलती है ठण्डी हवा
तब करते हैं खर खर पात
काले काले बादलों संग
आ गई बरसात
ठण्डा पानी भरकर लाते
जब भी आते काले बादल
गड़ गड़ गड़ आवाज लगाते
ठण्डे पानी ने दे दी है
भीषण गर्मी को भी मात
लगी झड़ी दिन रात

रंग बिरंगी कागज की नाव
तैरने सड़कों पर निकली
और रंग बिरंगी फूलों पर
उड़ रहीं हैं सुन्दर तितली
ठण्डे ठण्डे दिन हैं अब
और हैं ठण्डी ठण्डी रात
काले काले बादलों संग
आ गई बरसात

हरियाली है चारों तरफ
और हैं जंगल हरे हरे
फूल खिलें हैं रंग बिरंगे
और तालाब भी हैं सब भरे भरे
ठण्डी ठण्डी बूंदें जब
करती हैं सबके गीले हाथ
काले काले बादलों संग
आ गई बरसात

● दिनेश कुमार बिनौले, देवास

अण्डा डरावली

गर्मियों के दिन हम लोग आम के पेड़ पर खेल रहे थे। खेल का नाम अण्डा डरावली था और वह पेड़ों पर ही खेला जाता है। एक बार हम लोग आम के पेड़ पर खेल रहे थे। तो दो-तीन लड़कों की दाम के बाद एक लड़के पर दाम पड़ी और किसी एक लड़के ने डण्डा फेंका और पेड़ पर चढ़ गया। फिर दाम देने वाला लड़का एक डाली पकड़कर पेड़ के ऊपर चढ़ रहा था तो वह थोड़े ही ऊपर तक चढ़ पाया और उसके हाथ छूट पड़े। वह नीचे गिर पड़ा। नीचे गिरते समय वह थोड़ा तो हँसा। लेकिन जब उसने उठने की कोशिश की तो उसकी कमर में दर्द हुआ। और वह ज़ोर से रोने लगा और बोला कि मुझे उठाओ तो। सभी लड़के पेड़ से नीचे आ गए। सब उसके दोस्त थे।

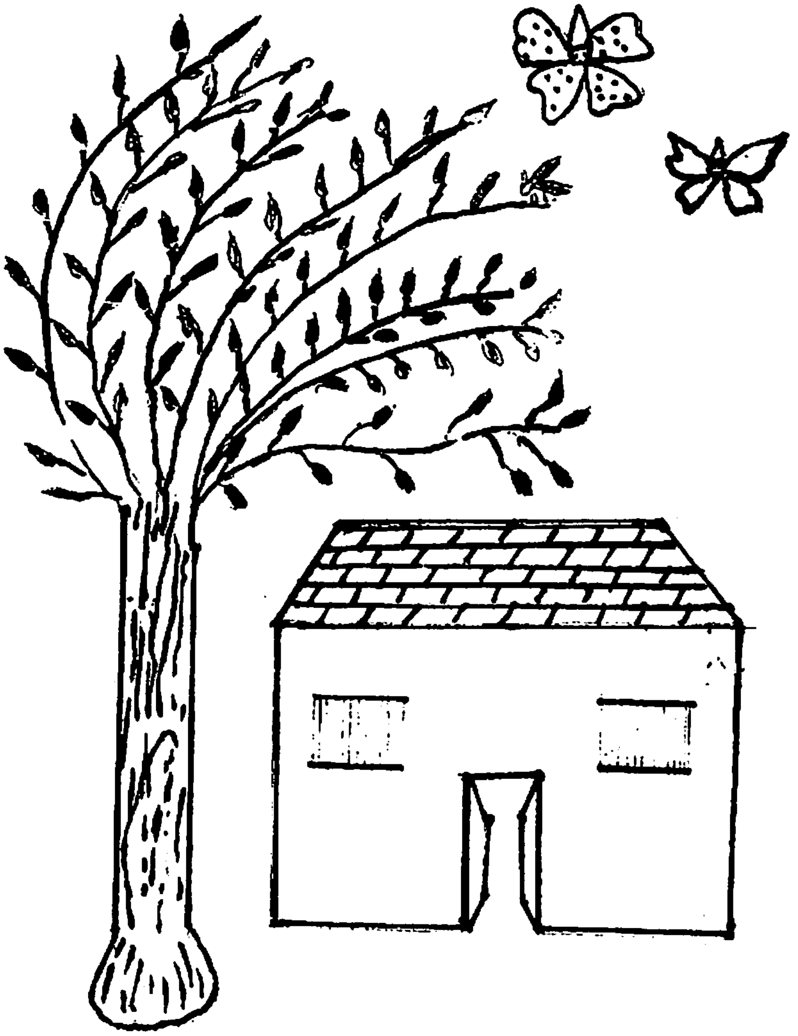

एक लड़के ने न सोचा न विचारा और झट से उठाकर उसकी कमर को पीछे की ओर झुकाने लगा। सब लड़कों ने कहा कि ऐसा मत करो। उसके कमर की हड्डी टूट जाएगी। उस लड़के ने कहा कि मैं बिना सोचे समझे ऐसा काम नहीं करूँगा।

● सीताराम आठिया,
मड़देवरा, छतरपुर, म.प्र.

● चित्र : भानुप्रिया मुजाल्दा,
गंधवानी, धार, म. प्र.

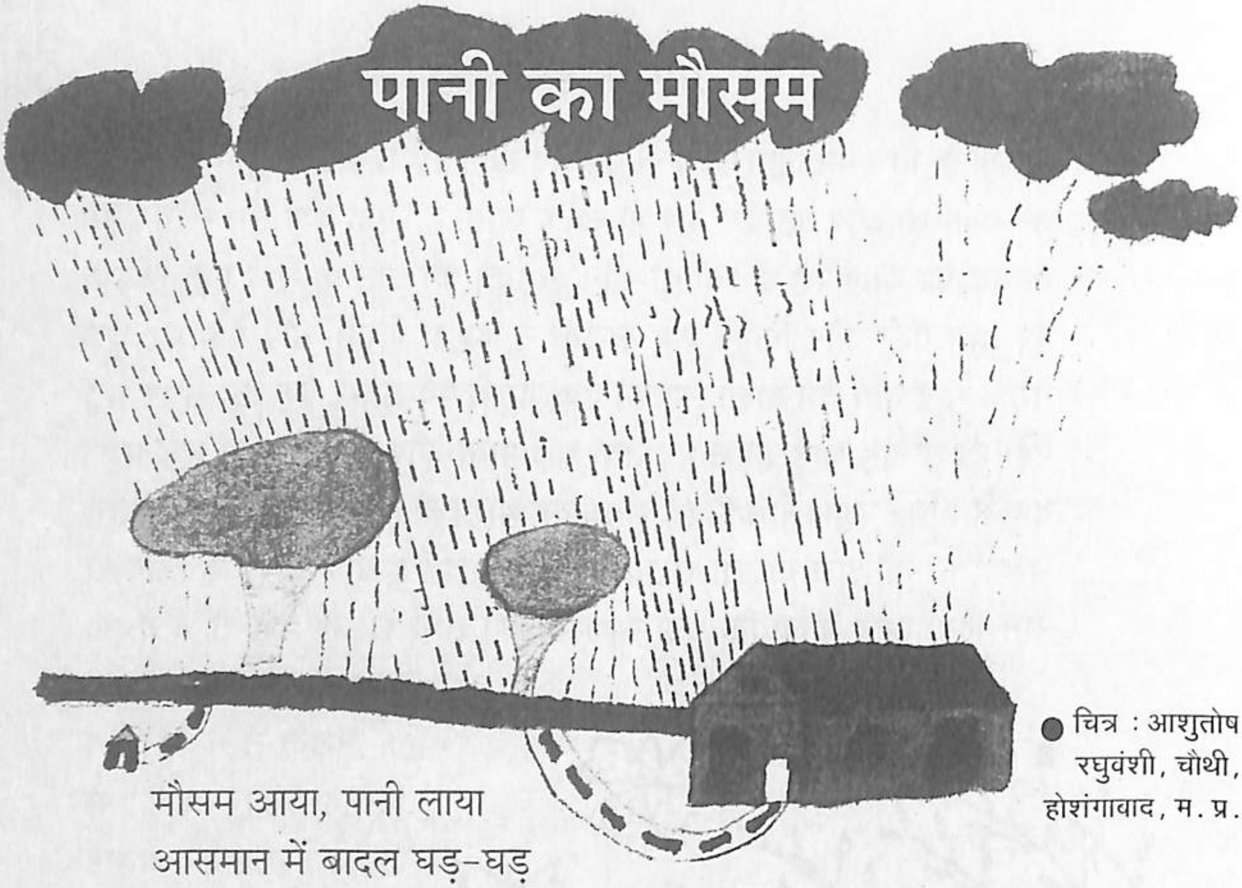

पानी का मौसम

● चित्र : आशुतोष रघुवंशी, चौथी, होशंगाबाद, म. प्र.

मौसम आया, पानी लाया
आसमान में बादल घड़-घड़

सूरज जी के नहीं ठिकाने
किधर पड़े हैं ओढ़े-ताने
गरमी का भभका तो देखो
चित्त गिरा है चारों खाने

कहीं-कहीं पर बूँदा-बाँदी
कहीं-कहीं पर पड़-पड़-पड़-पड़

ठंडी-ठंडी चली हवाएँ
पेड़ नया जीवन फिर पाएँ
चढ़ी उमंग पतंग सरीखी
नदिया ये सबको बतलाए

कभी इधर से कभी उधर से
बिजली तड़क रही है तड़-तड़

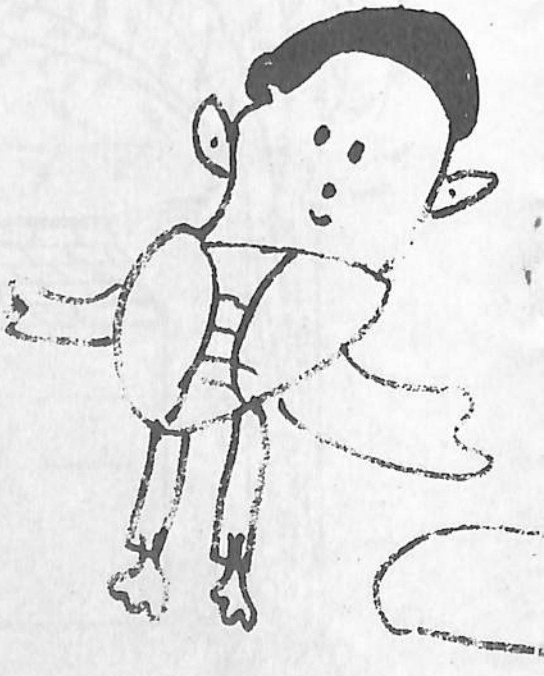

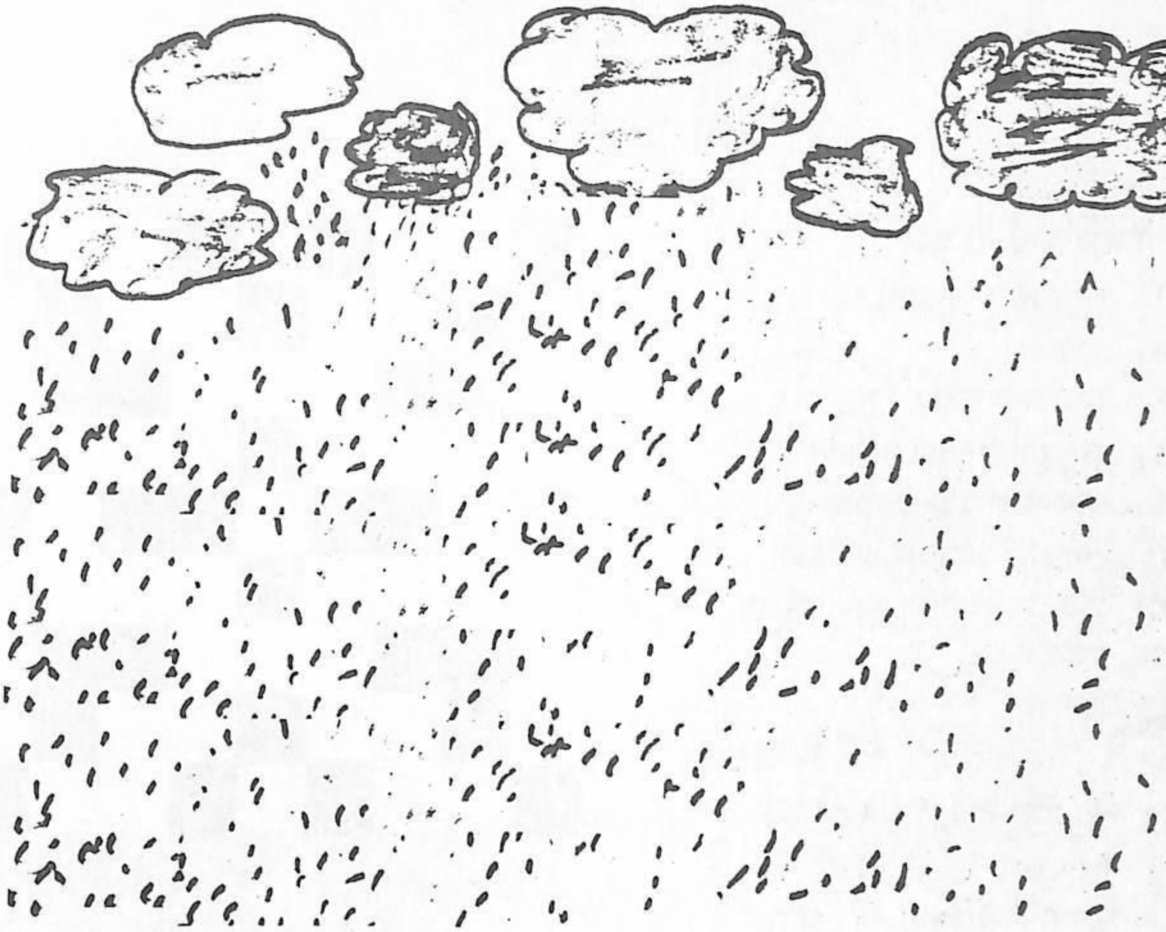

● चित्र : जसोदा कुशवाहा, हिरनखेड़ा, होशंगाबाद, म. प्र.

पानी टप-टप करके हँसता
और मूसलाधार बरसता
धरती, ऋतु का स्वागत करती
हरियाली का खोले बस्ता

बाँस, घास की बात न पूछो
वे भी सबसे कहते बढ़-बढ़

गीली माटी महक रही है
डाली-डाली लहक रही है
झड़ी लगी तो कोटर में चुप
चिड़िया चूँ-चूँ चहक रही है

इंद्रधनुष भी बोला हमसे
रंग नए जीवन में गढ़-गढ़

● चित्र : मनु, बिजनौर, उ. प्र.

● राजा चौरसिया

वर्ग पहेली - 109

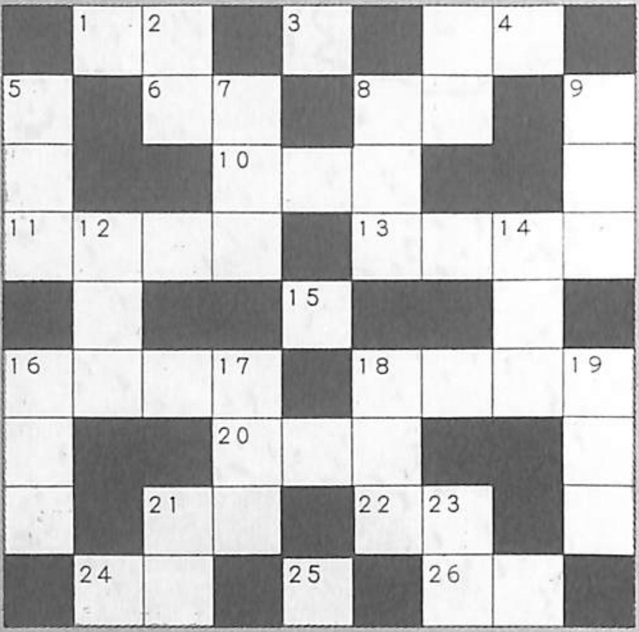

संकेत : बाएँ से दाएँ

1. कविताएँ रचने वाला (2)
4. पानी (2)
6. उबालकर पकाया गया चावल (2)
8. परशुराम में छिपा है जानवर (2)
10. अभिनय द्वारा इसका मंचन कर सकते हैं (3)
11. ऐसा शोर जो मधुर लगे (4)
13. आधी नाशपाती, आधा गाड़ीवान, नष्ट हो सकते हैं (3)
16. आगे सुर, पीछे गरमी का एक महीना (2)
18. निरापद रजवाड़े में पैरों की धूल (4)
20. राम गिरा नीचे में राग का स्त्रीलिंग (3)
21. कशमकश में संदेह (2)
22. दिन में दिखाई देने वाला तारा (2)
24. जानवर में है दुल्हन का जोड़ीदार (2)
26. वही सफल होता है, जो होता है इसका पक्का, इसे बजाकर सुनते भी हैं (2).

संकेत : ऊपर से नीचे

2. कवि भारतीय में चाँदनी (2)
4. किरण (2)
5. घुँघराले बालों से बनकर झूमने वाली लट (3)
7. खींचतान भी और टेंशन भी पर हिन्दी में (2)
8. लपकना में छिपी दूसरी क्रिया (3)
9. फूल भी और सहृदय भी (3)
12. हर पल में है तरंग (3)
14. सवा नर में है नर का पूर्वज (3)
16. खुशबू (3)
17. पेट्रोलियम पदार्थों का निर्यातक एक देश (3)
18. आदि कटे जल, बीच कटे पंख (3)
19. यह भारतीय मिठाई जब पहली बार एक विदेशी ने देखी, तो उसकी समझ में नहीं आया कि इसमें रस कैसे भरा गया (3).
21. शहर में छिपा है बाण या तीर (2)
23. दुविधा में ढूँढो चंद्रमा (2)

संकेत : न बाएँ से दाएँ, न ऊपर से नीचे

3. गेहूँ–जैसी बालियों वाला एक अनाज (1)
15. अच्छा बनाने वाला उपसर्ग (1)
25. जलती हुई मोमबत्ती, लालटेन, दीपक में होती है (1)

रावेन्द्र कुमार रवि, रामगढ़, नैनीताल, उ.प्र. द्वारा भेजी गई वर्ग पहेली पर आधारित

वर्ग पहेली - 109 का हल चकमक के अक्टूबर, 2000 अंक में छपेगा। हल भेजने के लिए वर्ग पहेली की जाली को चकमक से न काटें। संकेतों के नम्बर डालकर शब्द लिखकर भेज दें। सर्वशुद्ध हल भेजने वालों को चकमक का अक्टूबर, 2000 का अंक उपहार में भेजा जाएगा।

प्यारा कुनबा

निकोलाई नोसोव

अब तक तुमने पढ़ा कि मीश्का हमेशा कुछ नया करना चाहता है। उसे मुर्गी-पालन नाम की एक किताब मिलती है। वह अपने दोस्त कोल्या के साथ इन्क्युबेटर (मुर्गी के अण्डे को सेने वाली मशीन) बनाने की तैयारी करता है। शुरू में कुछ अड़चनों को पार करने के बाद दोनों मिलकर गाँव से मुर्गी के ताज़े अण्डे लाते हैं। फिर इन्क्युबेटर बनाने के लिए सामान की जुगाड़ भी कर लेते हैं। और फिर शुरूआत होती है मुर्गी के अण्डों को सेने की। उन्हें ताप को एक निश्चित डिग्री पर बनाए रखना था। मीश्का और कोल्या बारी-बारी से सोते-जागते हैं। दोनों मिलकर अण्डों की देखभाल करते हैं। एक दिन किताब में पढ़कर कोल्या अण्डों को पलटता है तो मीश्का उस पर चिल्लाने लगता है। तब मीश्का के माँ-पिता आकर बीच-बचाव करते हैं। और अब आगे . . . .

ताप बढ़ा

लगभग दस बजे किसी कारण तापमापी में पारा आधा डिग्री चढ़ गया, इसलिए लैम्प ज़रा नीचे करने के लिए हमें एक कॉपी निकालना पड़ी।

''इसका कारण मेरी समझ में नहीं आता।'' मीश्का ने हैरानी से कहा। ''सारी रात ताप नीचे जाता रहा और अब फिर चढ़ता जा रहा है। अजीब बात है।''

दोपहर के खाने के पहले ताप और बढ़ जाने के कारण हमें लैम्प फिर नीचे करना पड़ा।

खाने के बाद मीश्का सोफे पर लेट गया और फिर से सो गया। बैठे-बैठे मैं कुछ अकेला-सा महसूस करने लगा, इसलिए अपना एलबम लाकर मैं सोये हुए मीश्का के चित्र बनाने लगा। सोते हुए लोगों के चित्र बनाना हमेशा आसान रहता है, क्योंकि यही एक समय है, जब कोई स्थिर रहता है।

थोड़ी देर बात कोस्त्या देव्यात्किन अन्दर आया। जब उसने मीश्का को सोते हुए देखा, तो पूछा–

''इसे क्या हुआ है, नींद की बीमारी?''

''नहीं,'' मैंने कहा। ''ज़रा झपकी ले रहा है।''

कोस्त्या ने आगे बढ़कर मीश्का के कंधे को झंझोड़ दिया। ''उठो भाई, कितना सोओगे?''

मीश्का उछल पड़ा।

''ऐं, क्या हुआ? सबेरा हो गया?''

''सबेरा!'' कोस्त्या हँस पड़ा। ''जनाब, शाम होने को है, शाम। चलो, उठो और बाहर खेलने चलो। देखो तो, सूरज चमक रहा है और पंछी गा रहे हैं।''

''खेलने के लिए हमारे पास समय नहीं है। हमें काम करना है!'' मीश्का बोला।

''कौन-सा काम?''

''बड़ा ज़रूरी काम है।''

मीश्का इन्क्युबेटर के पास गया, तापमापी की ओर देखा और चीख पड़ा–

''ऐ, तुम क्या कर रहे हो! बाज़ार के बकरे की तरह सिर्फ बैठे हो? देखा, यहाँ क्या हो गया है!''

मैंने तापमापी को देखा। पारा फिर 39.5 डिग्री पर था। मीश्का ने जल्दी-जल्दी लैम्प नीचे किया।

''मैं कहता हूँ कि अगर मैं नहीं उठ गया होता, तो तुम उसको 40 डिग्री तक चला जाने देते!'' वह गुर्राकर बोला।

''तुम हमेशा खुर्राटे लेते रहो, तो यह मेरा कसूर नहीं है।''

''यह मेरा कसूर है कि मैं सारी रात नहीं सोया?''

''मेरा भी तो नहीं है,'' मैंने कहा।

कोस्त्या ने इन्क्युबेटर को देखा। ''यह क्या है? कोई नया भाप का इंजन?'' उसने पूछा।

''बको मत, क्या यह भाप का इंजन जैसा लगता है?''

''अच्छा तो तुम ही कहो क्या है?''

''पहचानो!''

''अं...!'' सिर खुजलाते हुए कोस्त्या बोला। ''निश्चित ही भाप-टर्बाइन है।''

''बिल्कुल गलत। फिर कोशिश करो!''

''ठीक है। तो शायद जेट-इंजन है।''

मीश्का और मैं ठट्ठा मारकर हँस पड़े। ''तुम सैकड़ों साल सोचते रहो, तो भी ठीक नहीं बता सकोगे!''

''अच्छा, तो बताओ क्या है?''

''इन्क्युबेटर।''

''ओ, इन्क्युबेटर! अब समझा! यह किसलिए है?''

''तुम्हें मालूम नहीं इन्क्युबेटर किसलिए होता है?'' मीश्का ने पूछा। ''यह चूज़े निकालता है।''

''किससे?''

''अरे मूर्ख, अण्डों से, और किससे?'' मीश्का ने चिढ़कर कहा।

''ओहो, अण्डों से! तब ठीक है। मतलब यह कि इन्क्युबेटर मुर्गी के बदले काम करता है। मैं उसके बारे में सब कुछ जानता हूँ, लेकिन मेरा ख्याल था कि इसे हेनकूपेटर कहते हैं। और अण्डे कहाँ हैं?''

''यहाँ पेटी में।''

''ज़रा दिखा दो, न।''

''बिल्कुल नहीं। अगर हर किसी को हम दिखाने लगें, तो चूज़े कभी पैदा नहीं होंगे। हाँ, अगर चाहो, तो उनको पलटने के समय तक ठहर सकते हो और तब तुम देख भी लोगे।''

''और यह कब होगा?''

मीश्का ने और मैंने जल्दी से कुछ हिसाब किया और उससे पता चला कि आठ बजे अण्डों को पलटा जाएगा।

कोस्त्या ने कहा कि वह ठहर जाएगा। इसलिए मीश्का शतरंज ले आया और हम खेलने बैठ गए।

सच कहें, तो तीन जनों के शतरंज खेलने में कोई मज़ा नहीं है। क्योंकि असल में खेलते हैं दो ही जने और तीसरा सिर्फ पास में बैठकर सलाह देता रहता है। और इससे कुछ फायदा भी नहीं होता। अगर तुम जीत गए,तो कहा जाएगा कि तुम्हें मदद मिली थी। और अगर हार गए, तो खिल्ली उड़ाई जाएगी और यह कहा जाएगा कि मदद मिलने के बावजूद तुम हार गए। शतरंज एक ऐसा खेल है जिसे सिर्फ दो आदमियों

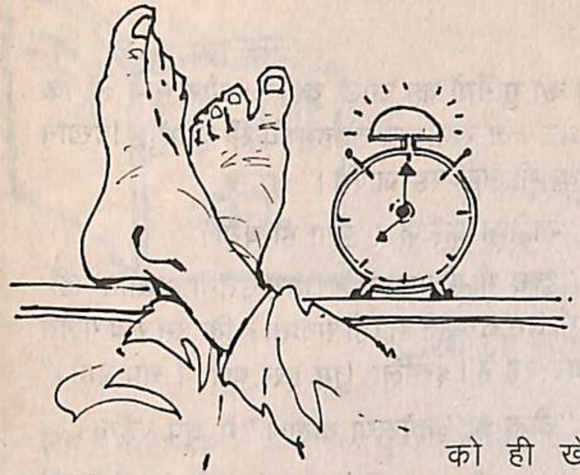

को ही खेलना चाहिए और वह भी किसी के दखल दिए बिना।

आखिर घड़ी ने आठ बजाए। मीश्का ने इन्क्युबेटर खोला और अण्डों को उलटना शुरू किया और कोस्त्या ने पास खड़े रहकर गिनना शुरू किया।

''दस, ग्यारह,'' उसने गिन लिया। ''ग्यारह अण्डे। सो तुम्हारे पास ग्यारह चूज़े हो जाएँगे?''

''ग्यारह?'' मीश्का ने आश्चर्य से दुहराया। ''तुमने गलत गिना है। वे बारह थे। किसी ने एक अण्डा ले तो नहीं लिया? यह बड़ी ही शर्म की बात है। इधर ज़रा-सी झपकी ली और उधर गायब! और तुम क्या कर रहे थे?'' वह मुझ पर टूट पड़ा। ''तुम तो निगरानी कर रहे थे, न?''

''सो मैं कर रहा था। सारा समय मैं यहाँ था। चलो, हम फिर से गिन लें। कोस्त्या ने ज़रूर गलती की है।''

मीश्का ने गिनती की और अब अण्डे तेरह हो गए।

''देखो,'' वह गुर्राया।'' अब एक अण्डा ज़्यादा है। किसने रखा होगा?''

तब मैंने गिनती की। अण्डे ठीक बारह निकले।

''वाह रे गिननेवाले!'' मैंने कहा। ''बारह तक भी ठीक गिनना नहीं आता!''

''ओह,'' मीश्का रुआँसा होकर बोला। ''मैंने यहाँ सब अण्डे गड्डमड्ड कर दिए। एक अण्डा पलटना बाकी था और मुझे याद नहीं कि वह कौन-सा है।''

वह याद करने की कोशिश में था कि तभी माया दौड़ती हुई आई। वह सीधे इन्क्युबेटर के पास गई और सब से बड़े अण्डे की ओर संकेत करके बोली,

''इसमें मेरा चूज़ा है।''

मीश्का को और मुझे गुस्सा आ गया और हमने उसे दूर हटा दिया।

''अगर तुम फिर यहाँ आकर हमें तंग करोगी, तो याद रखना, तुम्हें कोई भी चूज़ा नहीं मिलेगा, हमने कह दिया।''

माया रोने लगी।

''तुमने कटोरियाँ ले लीं। मैं चाहूँ जितना देख सकती हूँ।''

''ओहो, यह बात है? हम भी देख लेंगे,'' मीश्का ने उसे बाहर धकेलकर दरवाज़ा अच्छी तरह बन्द करते हुए कहा।

''अब क्या करें?'' मैंने पूछा। ''क्या सब अण्डों को फिर से पलट दें?''

''नहीं, यह ठीक नहीं होगा, क्योंकि शायद हम उनको पलटकर फिर से उसी तरह रख देंगे, जैसे वे पहले थे। इससे अच्छा यह होगा कि वही एक अण्डा पहले जैसा रहे। आगे हम अधिक सावधान रहेंगे।''

''तुम्हें अण्डों पर निशान लगा देना चाहिए, जिससे तुम्हें पता रहे कि कौन-सा अण्डा तुमने पलट दिया है और कौन-सा नहीं,'' कोस्त्या ने सुझाव दिया।

''कैसे?'' मीश्का ने पूछा।

''उन पर तुम गुणा का चिन्ह लगा सकते हो।''

''नहीं, मैं संख्या लिखूँगा।''

मीश्का ने पेन्सिल ली और एक से बारह तक की संख्याएँ क्रमशः सब अण्डों पर लिख दीं।

''अगली बार पलटते समय संख्या नीचे की ओर रहेगी और उसके बाद फिर संख्या ऊपर की ओर आ जाएगी। अब गलती होना

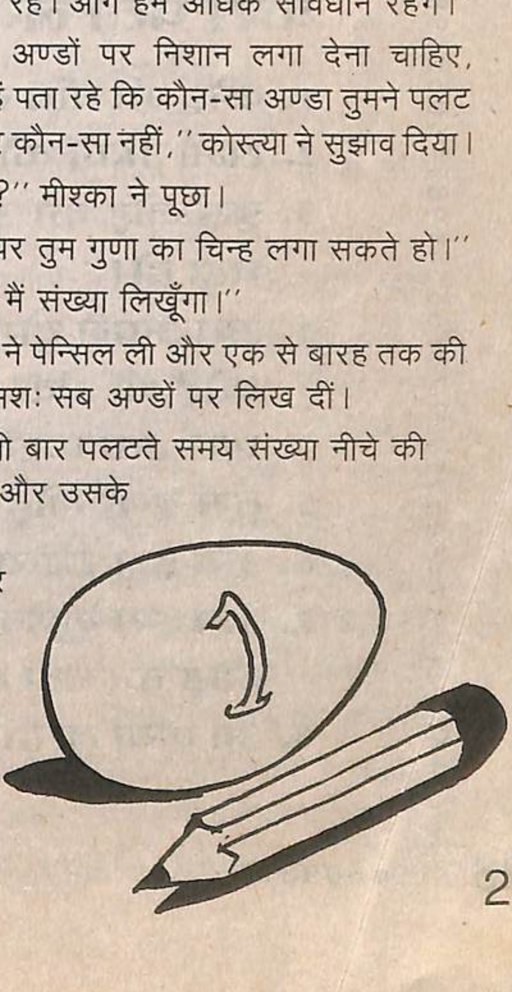

असम्भव है," मीश्का ने कहा और इन्क्युबेटर को बन्द कर दिया।

कोस्त्या जाने लगा, तब मीश्का ने उससे कहा, "हमारे इन्क्युबेटर के बारे में स्कूल में किसी से मत कहना।"

"भला क्यों?"

"पता नहीं...शायद वे हमारी खिल्ली उड़ाएँ।"

"खिल्ली क्यों उड़ाएँगे? इन्क्युबेटर बड़े काम की चीज़ है।"

"देखो, तुम जानते हो कि लड़के कैसे हैं। वे हम दोनों को मुर्गियों का जोड़ा कहेंगे। और मान लो कि यह असफल रहा, तब तो हम किसी को मुँह दिखाने लायक भी नहीं रह जाएँगे।"

"लेकिन असफल होगा ही क्यों?"

"कुछ भी हो सकता है। बात उतनी आसान नहीं, जितनी तुम समझते हो। हो सकता है कि हम सब गलत ही कर रहे हैं। इसलिए तुम इस बारे में चुप रहो।"

"ठीक है," कोस्त्या बोला। "मैं चुप रहूँगा।"

(अगले अंक में जारी)

● सभी चित्र : सौरभ दास

9546098+73+6571=8738 = 398756−90287+6571425 %546738+634

गणित का खेल

कैसे पता लगाएँ नम्बर!

1. कोई भी पाँच या छे अंकों की संख्या लो।
2. सभी अंकों को जोड़ लो।
3. इस जोड़ को उस पाँच या छे अंकों वाली संख्या से घटा दो।
4. अब अपने दोस्त से कहो कि वह इस संख्या का कोई भी अंक गायब कर दे। और बाकी के अंक एक-एक करके तुम्हें बताए।
5. तुम इन्हें जोड़ लो।
6. अब इस संख्या के पास वाला 9 का गुणज ढूँढो।
7. अब इस गुणज से दोस्त के द्वारा बताए अंकों के जोड़ को घटा लो।
8. आ गया तुम्हारा गायब अंक!

546098+73+6571=8738 = 398756−90287+6571425 %54673+6876

आज का बाल साहित्य

'चर्चा किताबों की' के इस कॉलम में हम किसी एक या दो किताबों के बारे में बताते रहे हैं। पारुल ने बाल-साहित्य के बारे में एक अच्छा लेख हमें भेजा। इसमें किसी एक किताब की बात नहीं है बल्कि बच्चों के लिए लिखी गई ज़्यादातर सामग्री के बारे पारुल ने अपने विचार रखे हैं।

जब मैं अख़बार या अन्य बाल पुस्तकें-पत्रिकाएँ आदि पढ़ती हूँ तो उनकी अधिकतर कहानियाँ आदर्शवादी, शिक्षाप्रद, सच्चाई की बुराई पर विजय और अन्य पुराने फॉर्मूलों पर आधारित होती हैं।

अगर ये कहानियाँ स्कूली बच्चों के बारे में होती हैं तो उनके वही पुराने नाम होते हैं। दूसरी बात यह है कि इन कहानियों के दो ही पहलू होते हैं– बहुत अच्छे या बहुत बुरे। अगर अच्छे बच्चे होते हैं तो माता-पिता का कहना मानने वाले, सदा समय पर विद्यालय जाने वाले, ईमानदार और सच बोलने वाले, शिक्षकों का कहना मानने वाले, पढ़ाई में अव्वल, सहपाठियों की मदद करने वाले और शैतानी न करने वाले। मानो ये समय से पहले ही बूढ़े हो गए हों। या फिर बुरे पक्ष में अमीर घरों के बिगड़े हुए लड़के-लड़कियाँ रहते हैं।

पढ़ाई में कमज़ोर, कामचोर, घमंडी, शैतान और अन्य दुर्गुणों से सज्जित।

ऐसी कहानियों में अक्सर अच्छे विद्यार्थी बुरे विद्यार्थियों को समझाते हैं, उन्हें सुधरने का मौका देते हैं, पर वे नहीं समझते। कभी-कभार बीच में कोई ऐसी हृदय परिवर्तित करने वाली घटना घट जाती है कि बुरे विद्यार्थियों का स्वभाव एकदम बदल जाता है। वे मक्खन की तरह मुलायम और आईने की तरफ साफ होकर माफी माँग लेते हैं और आगे से कभी ऐसा न करने की प्रतिज्ञा कर लेते हैं।

दूसरे तरह की कहानियाँ जो कि राजा-रानी, राजकुमारों, जमींदारों, किसान, जनसाधारण और मंत्रियों पर आधारित होती हैं। ये कहानियाँ अन्त में कोई न कोई शिक्षा ज़रूर देती हैं।

इनमें भी पात्रों के नाम वही रटे रटाए जैसे – महाबली, रामसिंह, शेरसिंह, विक्रम सिंह और रामू आदि होते हैं। राजा बहुत दयालु, पराक्रमी, सहृदय और प्रजा की देखभाल करने वाला होता है। या फिर जालिम और बुरे स्वभाव का, प्रजा पर अत्याचार करने वाला, फिजूलखर्च और बदमाश होता है। प्रजा त्रस्त रहती है और छुटकारा पाने के लिए उपाय ढूँढती है। मंत्री राजा के खिलाफ षड़यंत्र रचता है, पड़ोसी राज्य हमला करता है, किसी वर्ष फसल कम होती है, अकाल पड़ता है, और कहानी में हैप्पी एंड (सुखद अन्त) होता है। प्रजा फिर से धन-धान्य से समृद्ध हो जाती है। तो किसी अन्य कहानी में हमारे शूरवीर राजा या राजकुमार शत्रुओं के छक्के छुड़ाते हैं।

किसी कहानी में राजा कर बढ़ा देता है, प्रजा त्राहि-त्राहि कर उठती है। गुप्त धन मिलता है या राजा बीमार पड़ जाता है। लोगों को दवाई लाने के बहाने यहाँ-वहाँ भेजा जाता है। एक राज्य की राजकुमारी दुश्मन राज्य के राजकुमार से प्रेम करने लगती है। राजा प्रेमी को किसी कठिन काम को पूरा करने को कहता है। ईनाम स्वरूप राजपाट और राजकुमारी का हाथ दिया जाता है। इन पुराने सिद्धान्तों और जुमलों के अतिरिक्त इन कहानियों में विशेष नयापन नहीं रहता है और अन्त में हमें इस कहानी से यह शिक्षा मिलती है कि..... आदि-आदि।

अब तीसरे तरह की कहानियों को लेकर सुन्दरवन के पशु-पक्षी आते हैं। इन कहानियों में जानवरों का मानवीकरण कर राजा-रानी की ही तरह कहानियाँ लिखी जाती हैं। लेखक ज़ालिम शेर, दुष्ट भेड़िया, चालाक लोमड़ी, नन्हा खरगोश, चंचल गिलहरी और मोटू हाथी को बंधी हुई इमेजों से बाहर लाने को तैयार नहीं। अधिकतर जानवरों के नाम चिंचीं, चूंचूं, चुन्नू, मुन्नू, चुनमुन, चिंकू, पिंकू, रिंकू, बन्टी, गोटू, मोटू, कालू और विकी वगैरह रखे जाते हैं। जबकि शेर का नाम बहादुर विक्रम या वीर जैसा कुछ रख दिया जाता है।

शेर और भेड़िया बड़े दुष्ट होते हैं और जानवरों को परेशान करते हैं या खा जाते हैं। वैसे कभी-कभी शेर को भी अच्छा बना दिया जाता है। लोमड़ी अपनी चालाकियों से बाज नहीं आती है और जंगलवासियों को परेशान करती है। फिर सदा की तरह खरगोश या कोई अन्य छोटा पशु-पक्षी छुटकारे की कोई तरकीब निकालता है।

इन सभी जंगली जानवरों की दो ही मौसियाँ होती हैं– लोमड़ी मौसी और बिल्ली मौसी, जो शेर की मौसी भी कहलाती है। हाथी को काका बनाते हैं और भालू को दादा। बन्दर जो विज्ञान के अनुसार मानव का पूर्वज या बाप है उसे बच्चों का बन्दर मामा बना दिया जाता है। अगर बन्दर मामा न हों तब हम चंदा मामा से ही काम चला लेते हैं।

कुछ कहानियों में जानवर होली, दीपावली तथा अन्य त्यौहार मनाते हैं, समस्याएँ सुलझाने के लिए मीटिंग बुलाते हैं, एक दूसरे का जन्मदिन मनाते हैं या फिर मेला देखने जाते हैं।

अधिकांश कहानियों में गिने चुने जानवर ही पात्र होते हैं जैसे – बन्दर, भालू, हिरन, शेर, हाथी, तोता, खरगोश, लोमड़ी, चिड़िया और कौआ वगैरह। इनसे कुछ हटकर जिराफ, गैंडा, अजगर, बारहसिंघा, सेही, नीलगाय, पांडा और ऊदबिलाव जैसे जीव-जन्तुओं को पात्र नहीं बनाया जाता है।

'टीपू गधे के रोमांचक कारनामे' नामक एक किताब है। आदर्शवादी और शिक्षापूर्ण बातें इस किताब में भी हैं लेकिन रोचक ढंग से प्रस्तुत की गई हैं न कि पाठकों पर अपने विचार थोपे हैं। गधा इस कहानी का प्रमुख नायक है जो अन्य जगहों पर मंदबुद्धि और मूर्ख समझा जाता है और हँसी का पात्र बनाया जाता है।

चकमक पत्रिका में प्रकाशित कहानियाँ इन सबसे अलग तरह की होती हैं। चिल्ड्रन बुक ट्रस्ट और नेशनल बुक ट्रस्ट की कुछ पठनीय किताबें हैं – भूकम्प और जंगल की आग, हमीरपुर के खंडहर,

एंटार्कटिका की ओर, गोम्पा के अमूल्य हार का रहस्य, पश्चिमी यूरोप की चित्रकला, उपनिषदों की कहानियाँ, सामान्य भारतीय साँप, आधुनिक एशियाई कहानियाँ, समुद्र विज्ञान, स्वतंत्रता संग्राम, नाटकों के देश में और तोत्तोचान सहित ढेरों किताबें।

इलाहाबाद की इंडियन प्रेस को पाठकों को सर्व प्रथम अंग्रेजी साहित्य का हिन्दी अनुवाद उपलब्ध कराने का श्रेय है। जिसने चालीस-पचास और साठ के दशक का उत्कृष्ट साहित्य छापा। इनमें से 'एक डर पाँच निडर', 'बड़े वन में छोटा घर', 'गुब्बारे और अफ्रीका यात्रा' और 'थैलाभर शंकर' जैसी किताबें पढ़ने योग्य हैं।

हमारे देश के अलावा रूस में भी बच्चों के लिए बहुत अच्छा बाल साहित्य लिखा गया है – 'सोने की चाबी और किस्सा बुरातीनो का', 'पापा जब बच्चे थे', 'तीन मोटे', 'जहाँ चाह वहाँ राह', 'हीरे-मोती', 'चमत्कारी बकरा', 'चूक और गेक', 'उक्राइनी लोक कथाएँ' और 'धातुओं की कहानियाँ' सहित ढेरों पुस्तकें।

रूसी किताबों की भाषा शैली बहुत बढ़िया होती है। लिखाई में अशुद्धियाँ नहीं होतीं, कौमा और नुक्ते का पूरा ध्यान रखा जाता है। चित्र भी बहुत बढ़िया होते हैं जो रूसी चित्रकार ही बनाते हैं।

दुख की बात तो यह है कि अक्सर बच्चों को ऐसी किताबें नहीं मिलती हैं। बहुत कम बच्चे ही ऐसी पुस्तकों के सान्निध्य में आते हैं। ज़्यादातर कॉमिक्स या मैगज़ीन ही पढ़ते हैं। उनमें जो कहानियाँ होती हैं, समझा जाता है कि उन्हें वैसी कहानियाँ पसन्द हैं। अगर वे बचपन से ही ऐसी किताबें पढ़ते हैं जो भाषा की दृष्टि से कमज़ोर होती हैं, जिनके बेसिरपैर के विषय होते हैं और जिनसे आधी-अधूरी, अधकचरी जानकारी मिलती है तो उन बच्चों की रुचि ही उस प्रकार की हो जाती है। क्या उनको फैन्टम, मेंड्रेक, चाचा चौधरी, सुपरमैन वगैरह की जगह मैक्सिम गोर्की की माँ, प्रेमचंद की कहानियाँ, पुराना लखनऊ, पश्चिमी यूरोप की चित्रकला, मनुष्य महाबली कैसे बना, शरतचंद्र के उपन्यास, एडगर एलन पो की कूप और काल तथा श्रेष्ठ विश्व कथा साहित्य जैसी पुस्तकें नहीं दी जा सकती हैं? जिनसे कुछ समझ बनती हो और भाषा क्षेत्र विस्तृत होता हो।

● पारुल बत्रा, दसवीं, टीकमगढ़, म.प्र.

● रेखा मुकाती, सातवीं, देवास, म.प्र.

तुम्हारी मनपसन्द ऐसी बहुत-सी किताबें तुम पढ़ते ही होगे। क्या तुम नहीं चाहोगे कि चकमक के ज़रिए तुम्हारे और दोस्त भी इनके बारे में जानें? तो उन किताबों के बारे में लिख भेजो – कि उनमें क्या है? पढ़कर क्या अच्छा लगा और क्या नहीं?

ये देश है तुम्हारा

बहुत दिनों से मन में यह बात थी कि चकमक में भी फिल्मों के बारे में एक नियमित स्तम्भ होना चाहिए। पर इसमें क्या प्रकाशित करेंगे? यह सवाल हमेशा बना रहा। सोचते-सोचते यह समझ आया कि फिल्मों का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है उसका गीत-संगीत। फिल्मों के गीत गली-गली में गूँजते रहते हैं। आजकल तो फिल्म बाद में देखने को मिलती है, उसका गीत-संगीत पहले सुनने में आ जाता है।

हमने सोचा क्यों न हम भी गीतों को ही फिल्मी दुनिया से परिचय का माध्यम बनाएँ। फिल्मों में बच्चों के लिए या बच्चों को विषय बनाकर एक से बढ़कर एक गीत लिखे गए हैं। उन्हें जब भी सुनो अच्छे ही लगते हैं। चाहे 'नानी तेरी मोरनी को मोर ले गए' हो या फिर 'दादी अम्मा, दादी अम्मा मान जाओ' हो या फिर 'लकड़ी की काठी'। निश्चित ही ये गीत तुम्हें भी अच्छे लगते होंगे।

इस स्तम्भ के अन्तर्गत हर अंक में ऐसा ही एक गीत छापेंगे। साथ ही उसके लेखक, संगीतकार और गायक से भी परिचित कराएँगे।

आशा है तुम्हें यह गीत-संगीत का पन्ना भाएगा।

यह अगस्त का महीना है यानी आज़ादी की याद का महीना। पन्द्रह अगस्त के आते-आते जहाँ-तहाँ राष्ट्रीयता से भरे गीत बजने लगते हैं। उनमें कुछ तो कोरी देश भक्ति के होते हैं, पर कुछ में ज़िन्दगी की सच्चाईयों की बात भी होती है। ऐसा ही एक गीत हमने इस कॉलम की शुरुआत के लिए चुना है।

यह गीत 1961 में बनी फिल्म 'गंगा -जमुना' का है। अभिनय सम्राट कहे जाने वाले दिलीप कुमार इसमें मुख्य भूमिका में थे यानी हीरो थे। और खास बात यह कि इस फिल्म के निर्माता भी दिलीप कुमार ही थे। दिलीप कुमार के छोटे भाई ने इस फिल्म में उनके छोटे भाई का ही किरदार निभाया था।

गंगा-जमुना फिल्म में यह गीत स्कूल में शिक्षक बच्चों को सिखाते हैं। यह गीत लिखा है शकील बदायूँनी ने। इसके लिए संगीत नौशाद अली ने तैयार

शकील बदायूँनी

किया। और गाया है हेमंत कुमार और बहुत सारे बच्चों ने मिलकर।

गीत अपने शब्दों, उसमें दिए भाव, संगीत और गायकों की आवाज़ के कारण सदाबहार बन गया है। यह गीत तुम्हें भी अच्छा लगेगा और हो सके तो तुम ढूँढकर सुनना।

नौशाद अली

ये देश है तुम्हारा ....

इंसाफ की डगर पे बच्चो दिखाओ चल के
ये देश है तुम्हारा, नेता तुम्हीं हो कल के

दुनिया के रंज सहना और कुछ न मुँह से कहना
सच्चाईयों के बल पे आगे को बढ़ते रहना
रख दोगे एक दिन तुम संसार को बदल के
इंसाफ की डगर पे ....

अपने हों या पराए सबके लिए हो न्याय
देखो कदम तुम्हारा हरगिज़ न डगमगाए
रस्ते बड़े कठिन हैं चलना सम्हल सम्हल के
इंसाफ की डगर पे ....

इंसानियत के सर पे इज़्ज़त का ताज रखना
तन-मन की भेंट देकर भारत की लाज रखना
जीवन नया मिलेगा अन्तिम चिता में जल के
इंसाफ की डगर पे ....

हेमंत कुमार

फिल्म : गंगा–जमुना
गीतकार : शकील बदायूँनी
संगीतकार : नौशाद अली
गायक : हेमंत कुमार और खूब सारे बच्चे

बादल बरसे

कविता सुरेश

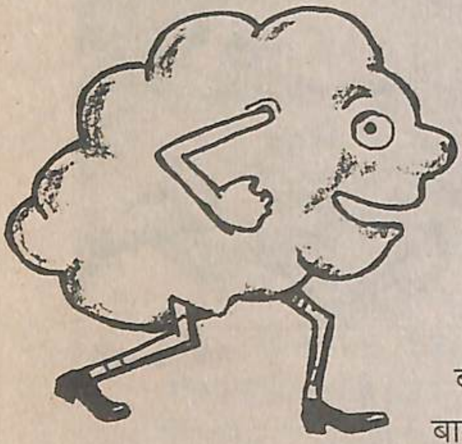

बिल्लू बादल नीले आसमान में टहल रहा था। दूर-दूर तक उसको अपने बराबर का कोई बादल नहीं दिखाई दे रहा था। अकेले घूमते-घूमते बिल्लू ऊब गया। उसने सोचा, 'चलो, थोड़ी देर हवा के साथ ही दौड़ लगाई जाए।'

हवा बहुत जल्दी में थी। बड़ी तेज़ी से भागी जा रही थी। बिल्लू उसके आगे जाकर अड़ गया। हवा बोली, "ए, बादल बच्चू, बीच में से हट जाओ। मैं बहुत जल्दी में हूँ।"

"तो जाओ न, मैंने तुम्हें रोका है क्या?" कहकर बिल्लू वहीं अड़ा रहा।

हवा ने पूरा ज़ोर लगाया और उड़ चली। बिल्लू तो यही चाहता था। हवा के साथ-साथ थोड़ी देर में वो कहीं का कहीं पहुँच गया। शुरू में तो बिल्लू बादल को मज़ा आता रहा, लेकिन थोड़ी देर में उसे चक्कर आने लगे।

इसी भागदौड़ में हवा एक ऊँचे से पेड़ के बीच में से होकर निकली। बिल्लू ने मौका देखा और पेड़ की शाखाओं को पकड़कर लटक गया। हवा तेज़ी से भागती हुई आगे निकल गई।

बिल्लू ने गहरी साँस ली और थोड़ी देर आँखें मिचमिचाता रहा। जब कुछ शान्ति मिली तो उसने नीचे झाँका। पेड़ के नीचे बच्चे खेल रहे थे। बिल्लू पेड़ पर से नीचे लुढ़कता हुआ बच्चों के पास पहुँच गया।

"अरे, देखो-देखो यह क्या है?" बच्चे चिल्लाते हुए एक-दूसरे को दिखाने लगे। बिल्लू के आसपास सारे बच्चे इकट्ठे हो गए।

सब हैरत से बिल्लू बादल को देख रहे थे। मुन्ना ने धीरे-से आगे बढ़कर बिल्लू को छुआ। बिल्लू सरककर बबली के कंधे पर चढ़ गया। बबली ने घबराहट के मारे उसे दूर उछाल दिया। अब बिल्लू जाकर मोनू की तोंद से टकराया और फिर वापस पलटकर बबली के पास पहुँचा। बबली डर के मारे नीचे बैठ गई। बिल्लू थोड़ी दूर तक उड़ता चला गया।

सारे बच्चे उसके पीछे भागे। अचानक बिल्लू रुक गया। सारे बच्चे भी रुक गए।

''तुम लोग रुक क्यों गए? मुझे पकड़ो मैं दौड़ता हूँ।'' बिल्लू ने बच्चों से कहा।

''हम तुम्हारे साथ नहीं खेलेंगे, तुमने हमें डरा दिया।'' बबली ने कहा, जो सबसे पीछे खड़ी थी।

''नहीं-नहीं, कोई बात नहीं। हम तुम्हारे साथ खेलेंगे। लेकिन पहले ये बताओ तुम हो कौन?'' मुन्ना ने बबली की बात काटते हुए कहा।

''मैं बिल्लू बादल हूँ। तुम लोग मुझे अपने साथ खिलाओगे न?''

''बिल्लू बादल! क्या बादलों के भी नाम होते हैं?''

''हाँ, होते क्यों नहीं, होते हैं। और मैंने अपना यह नाम खुद रखा है। बिल्लू। अच्छा है न!''

''हाँ, अच्छा है। और मेरा नाम है मोनू।'' कहकर मोनू ने अपना परिचय दिया। फिर तो सबने अपने-अपने नाम बताए। परिचय हुआ, दोस्ती हो गई। और फिर जब दोस्ती हो गई तो साथ खेलने में किसी को कोई एतराज़ नहीं रहा।

सारे दोस्त छिलकछाई खेलने लगे। तभी उन्होंने देखा हवा ज़ोर से चिल्लाती उसी तरफ आ रही है। बिल्लू दौड़कर मोनू के पीछे छुप गया। लेकिन हवा ने उसे देख लिया। वह बोली, ''बिल्लू, तुम यहाँ हो। मैं कब से तुम्हें ढूँढ रही हूँ।''

''क्यों ढूँढ रही हो? ''

''मेरे साथ चलो, मुझे सभी बादलों को इकट्ठा करना है।'' हवा बोली।

मैं तुम्हारे साथ नहीं जाना चाहता।'' बिल्लू मोनू के पीछे से निकलकर सामने आ गया।

''तुम्हें चलना पड़ेगा। मुझे अभी छोटू, बच्चू लड्डू को भी ढूँढना है।'' हवा ने बिल्लू को अपने पंख में लपेट लिया।

बच्चे हड़बड़ाकर एक पेड़ के तने के पास सिमट गए। बिल्लू ने जल्दी में अपने दोस्तों को कहा, ''मैं फिर आऊँगा।''

हवा जैसे आई थी वैसे ही चली गई। लेकिन बच्चे दुखी हो गए कि उनका दोस्त चला गया। अब उनका खेलने का मन नहीं रहा। सभी अपने-अपने घर चले गए।

रात भर सभी बच्चे अपने नए दोस्त के बारे में सोचते रहे। सभी को उम्मीद थी कि बिल्लू कल फिर आएगा।

सुबह स्कूल जाते हुए मुन्ना स्कूल के बारे में ही सोच रहा था। मोनू और बबली भी उसे रास्ते में मिल गए। बबली ने कहा, ''स्कूल के बाद हम सभी उसी पेड़ के नीचे बिल्लू का इन्तज़ार करेंगे। ठीक है।''

मोनू और मुन्ना ने सहमति में सिर हिलाया। तभी आसमान पर बादलों की भाग-दौड़ होने लगी। ज़ोरदार गरज सुनाई दी। तीनों दोस्त दौड़ते हुए स्कूल तक पहुँचे। बादलों की गरज अभी भी सुनाई

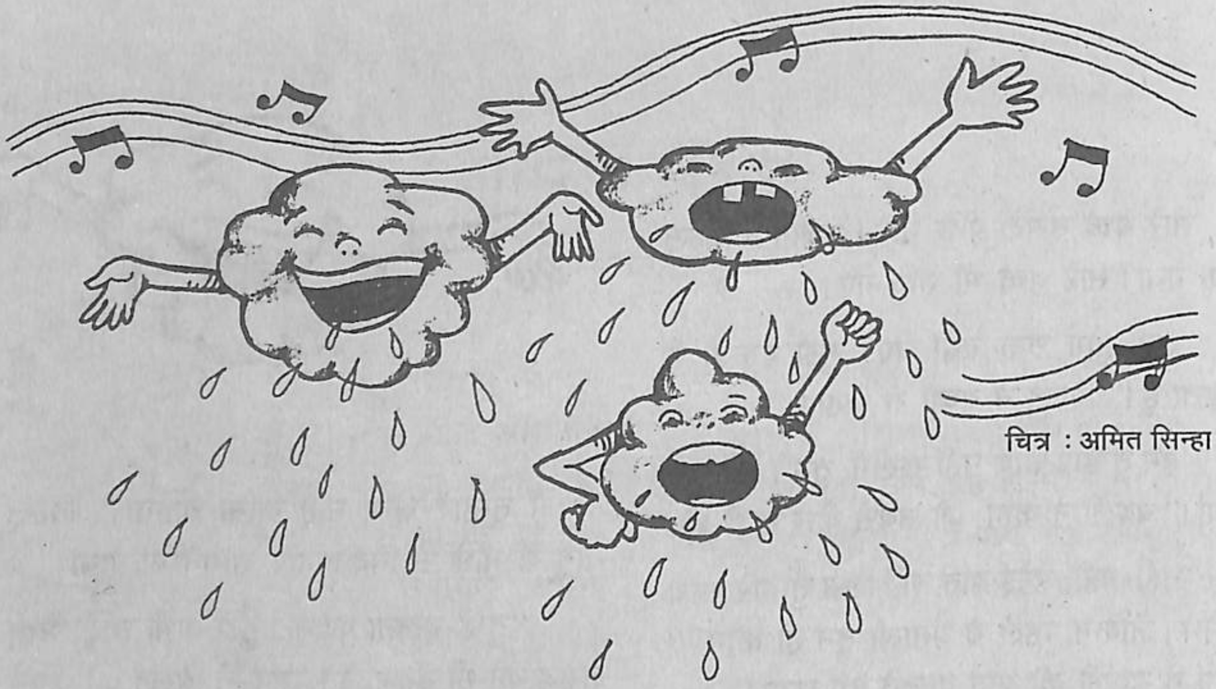

चित्र : अमित सिन्हा

दे रही थी। बबली ने स्कूल के बरामदे में खड़े-खड़े ही आसमान की तरफ देखा।

''देखो, बिल्लू वो रहा।''

''कहाँ?''

''हाँ, बिल्लू ही तो है।''

बादल आसमान में इकट्ठे हो रहे थे। हवा दौड़-दौड़कर बादलों को यहाँ से वहाँ ले जा रही थी।

देखते-देखते बड़ी-बड़ी बूँदें धरती पर गिरने लगीं। मोनू ज़ोर से चिल्लाया, ''बिल्लू, बिल्लू नीचे आ रहा है। वो देखो।''

बबली, मोनू और मुन्ना तीनों दौड़कर खुले में आ गए। तीनों ने हाथ फैलाकर बिल्लू को झेलना चाहा। लेकिन उनके हाथों में पानी की मोटी-मोटी बूँदें ही आईं।

''अरे, तुम तीनों क्यों भीग रहे हो?'' चलो अन्दर आओ। बरामदे में से दीदी ने आवाज़ लगाई।

तीनों ने मुट्ठी बन्द कर ली और दौड़कर बरामदे में आ गए। उधर आसमान से बिल्लू और छोटू और बच्चू पानी बनकर बरसते रहे।

चित्र : विवेक

जुलाई 2000 के माथापच्ची के हल

1.

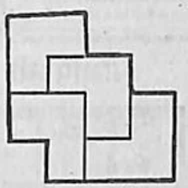

2. घर का नम्बर हैं 76

3. गिलास इस तरह रखे जा सकते हैं।

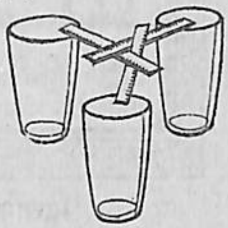

5. 42 लोग गणित और साहित्य दोनों में प्रशिक्षित हैं।

6. कई उत्तर हो सकते हैं, एक यह है –

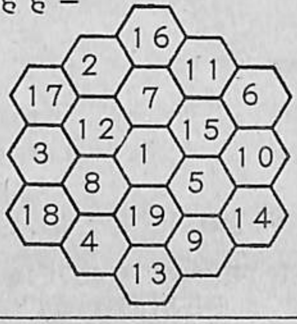

7.

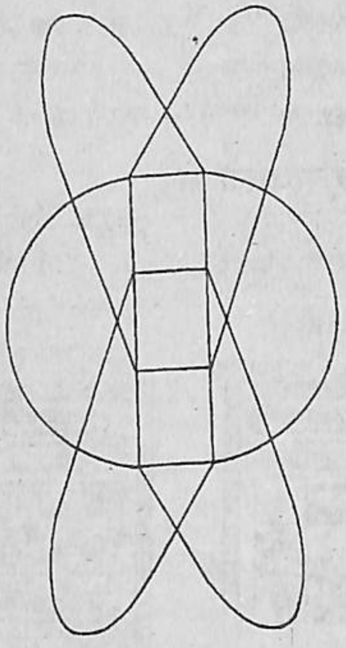

8. 30 और 15 वर्ष।

9. इनमें से एक की दिशा बाकी तीन की दिशा से अलग है, है न!

वर्ग पहेली 107 का हल

हि	त	का	री		दो	प	ह	र
मा			म	सी	हा			त्ती
ल	ग	न				दी	ना	र
य		का		अ	ज्ञा	न		त्ती
	दू	ब				द	फा	
सिं		पो	प	ला		या		बी
ह	ता	श				ल	की	र
ना			चा	ट	ना			ब
द	श	ह	रा		का	र	गि	ल

वर्ग पहेली 107 का सही हल भेजने वाले पाठक हैं – खुरशीद अनवर राही, जावद, नीमच; अभय कुमार जैन, भोपाल; **म. प्र.** । अपर्णा मनु, फरीदाबाद, **हरियाणा**। इन्हें अगस्त, 2000 का अंक भेजा जा रहा है।

●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●● यहाँ से काट लें ●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●●

चकमक

सदस्यता फॉर्म

मुझे/हमें निम्न पते पर माह .... से चकमक भेजना शुरू करें –

नाम .... मोहल्ला ....

डाकघर .... ज़िला .... पिन

सदस्यता शुल्क रु. से भेज रहे हैं।	छह माह	एक साल	दो साल	तीन साल	आजीवन	के लिए मनीआर्डर/ड्राफ्ट/चेक
	50.00	100.00	180.00	250.00	1000.00	

● जो लागू हो उस पर सही (✓) का निशान लगाएँ।

ड्रॉफ्ट/चेक एकलव्य के नाम में बनवाकर इस पते पर भेजें –

एकलव्य ई–1/25 अरेरा कॉलोनी, भोपाल 462 016 (म. प्र.)

फोन : 563380

नाम एवं हस्ताक्षर

एकलव्य का नया प्रकाशन

आओ माथापच्ची करें सीरिज़ में चौथी किताब

माथापच्ची

माथापच्ची

पृष्ठ : 16+4; मूल्य : 5 रुपए

चकमक के नियमित स्तम्भ
'माथापच्ची' में से चुने हुए सवालों से
तैयार एक पुस्तक

तीन अन्य किताबें हैं -

मूल्य : 3 रुपए

मूल्य : 6 रुपए

मूल्य : 5 रुपए

चारों किताबें रजिस्टर्ड डाक से प्राप्त करें केवल 35.00 रुपए में। राशि मनीआर्डर से इस पते पर भेजें - **एकलव्य, ई -1/ 25 अरेरा कॉलोनी, भोपाल-462016 म. प्र.**

यहाँ से काट लें

चकमक के सदस्य बनें आप : उपहार पाएँ दोस्त

आप चकमक का सदस्यता शुल्क भेज रहे हैं। अपने किसी ऐसे परिचित/दोस्त/परिवारजन का पता यहाँ लिखें जिसे आप चकमक से परिचित कराना चाहते हों। हम उन्हें चकमक का एक अंक उपहार में भेजेंगे।

नाम ....

मोहल्ला ....

डाकघर ....

ज़िला ....

पिन

ढाने में बाल मेला

24 जून 2000 को चकमक क्लब टीम चारूवा ने बाल समूह, मोरगढ़ी की मदद से मोरगढ़ी, खिरकिया में बाल मेले के आयोजन किया।

यह बाल मेला कोरकू ढाने याने कोरकू मोहल्ले में किया गया। बाल मेला 'नीम के पेड़ के नीचे' ढाने के बीचोंबीच रखा गया, जिसके सामने हैण्डपम्प लगा था। इस बाल मेले में 55 बच्चों ने भाग लिया। इन 55 बच्चों में 5-6 बच्चे ही स्कूल जाने वालों में से थे। बाकी बच्चे या तो कभी स्कूल गए ही नहीं या फिर 2-3 साल स्कूल जाकर पढ़ना छोड़ चुके थे। इन में 3 से लेकर 14 वर्ष तक के बच्चे मौजूद थे।

हम सबसे पहले गली-मोहल्ले में अंटी खेलते, सायकिल टायर चलाते हुए या छोटे-भाई बहनों को सँभाले बच्चों को 'नीम के पेड़' तक लेकर आए।

शुरुआत में आशुतोष एवं अशोक ने बच्चों को गोले में बैठाकर आपसी परिचय करवाया एवं कुछ सामूहिक खेल कराने के बाद सभी बच्चों को टोलियों में बाँट दिया। टोलियों के नाम क्रमश: केला, ऊँट, मोर एवं खरगोश थे।टोलियों के लिए 'सचित्र नाम कार्ड' देखकर बच्चे बहुत खुश थे।

बालमेले में मुख्यरूप से 4 गतिविधियाँ रखी गईं। कहानी-कविता, मिट्टी के खिलौने बनाना, ऑरीगेमी और मोम चॉक से चित्रकारी करना।

प्रत्येक गतिविधि को करवाने के लिए 'नीम के पेड़' के आसपास के घरों के ओटले या आँगन थे। हर एक टोली अपने-अपने नाम कार्ड को हाथ में लेकर बारी-बारी से गतिविधियों में हिस्सा ले रही थी।

मिट्टी के खिलौने बनाने में बच्चों को ज़्यादा मज़ा आया। उन्होंने हिरण, हाथी, बैलगाड़ी इत्यादि उनके परिवेश से जुड़ी चीज़ें बहुत मन से बनाईं। इस गतिविधि के लिए नदी किनारे से छकड़ा (बैलगाड़ी) भरकर मिट्टी ले आए थे।

मोम चॉक से चित्रकारी करने का, इन बच्चों के लिए पहला अनुभव था। वे एक-दूसरे से छिपाकर कुछ बनाने की कोशिश कर रहे थे।

कहानी/कविता गतिविधि में ज़्यादा बच्चों ने अभिनय के साथ की जाने वाली सरल कविताओं में सक्रिय भागीदारी की। जैसे 'धम्मक धम्मक आता हाथी'... 'आओ करें दाँत में मंजन' इत्यादि।

'चित्र पोस्टर' देखकर सभी ने बारी-बारी से बात की। इनकी मदद से सामान्य गणित जोड़-घटाने की गतिविधि भी बच्चों ने मौखिक रूप से की।

किताब की कहानियाँ सुनने में कुछ बच्चों को ही मजा आया जबकि चकमक पत्रिका से 'मेरा पन्ना' शीर्षक के अन्तर्गत प्रकाशित व 'जामुन का भूत' सुनने में बच्चों को बड़ा मज़ा आया। एक गतिविधि के बाद दूसरी गतिविधि के लिए बच्चे दौड़-दौड़कर आ रहे थे।

बीच में गाँव के कई लोग बाल मेला देखने आए। इस दिन ज़्यादातर परिवारों के बड़े लोग खेत में काम पर गए थे। परन्तु समुदाय के बड़ी उम्र के जो भी लोग इस बाल मेले में आए, उन्होंने बच्चों के उत्साह एवं संस्था के प्रयास को सराहा।

बाल मेले के अन्त में आशुतोष ने एकलव्य संस्था एवं चकमक क्लब, चारूवा के बारे में बाल मेले में आए सभी बच्चों को जानकारी दी।

बाल मेले में आई एक लड़की ने कहा, ''पहले तो मैं यहाँ आने से डर रही थी, पर यहाँ आई तो मुझे बहुत अच्छा लगा।''

रपट : राजेश्री

माथा पच्ची

(1)

एक ठिगना और एक लम्बा आदमी घूमने जा रहे थे। ठिगना आदमी तीन कदम में जितना फासला तय करता, लम्बा आदमी सिर्फ दो कदम में तय कर लेता।

दोनों ने बायाँ पैर आगे बढ़ाकर चलना शुरू किया। अच्छा कितने कदम चलने के बाद दोनों के दाएँ पैर एक साथ उठेंगे।

(2)

एकड़, दोना, आस्तीन, विचार, छैया, बिसात, नौकर

क्या ख़ासियत है इन शब्दों में। बिल्कुल सही, इन सभी में कोई न कोई अंक छुपा है आस्तीन में तीन तो बिसात में सात। है न!

क्या तुम सिर्फ दस मिनिट में ऐसे पाँच शब्द और ढूँढ सकते हो।

(3)

99 + 9 = 9

इस हालत में तो यह समीकरण बिल्कुल गलत है ही? है न।

लेकिन हिन्दी का एक साढ़े तीन अक्षर का शब्द इस समीकरण के दाहिनी तरफ जोड़ दें तो समीकरण सही हो जाएगा! चलो सोचते हैं।

(4)

इस आकृति में 12 खाली गोले हैं। किसी भी ओर से देखें तो एक सीधी लाइन में 4 गोले आते हैं। इन गोलों में 1 से 12 तक के अंक भरना है। लेकिन एक शर्त के साथ, कि हर रेखा के 4 गोलों में भरे अंकों का जोड़ 26 आए। और हाँ कोई भी अंक दुबारा नहीं भरना है।

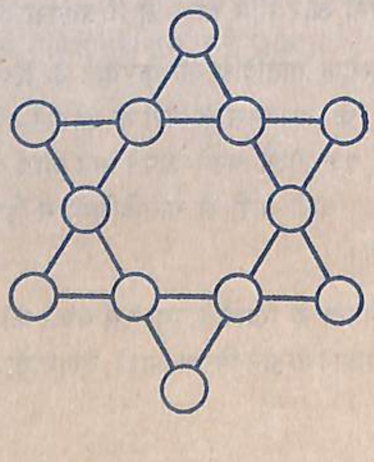

(5)

एक गणितज्ञ ने अपनी एक पुस्तक में अपनी उम्र इस तरह बयान की, '' मेरी ज़िन्दगी का एक तिहाई हिस्सा शिक्षा में खर्च हुआ। दस साल संगीत सीखा। दो साल तक मैंने नए-नए पक्षियों, पौधों को देखकर बिताए। बीस वर्ष मैंने दोस्तों-यारों के साथ शहर की खाक छानी।''

इस पुस्तक को लिखने के 12 साल बाद वह चल बसा। ज़रा हिसाब तो लगाओ कितने साल जिया वह।

(6)

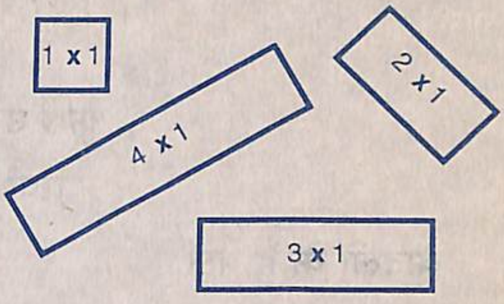

इन चार लकड़ी के टुकड़ों से एक वर्ग बनाना है। हाँ लकड़ी के टुकड़ों को तोड़ना या काटना नहीं है। तो चलो इन्हें जमाकर देखते हैं।

(7)

7	8	5	6
94	46	52	?

आठ खानों से बनी इस आकृति में हर खाने और उसके ठीक नीचे वाले खाने के अंक में एक खास सम्बंध है। यदि इसे जान लें तो इस खाने में अंक भरना मुश्किल नहीं होगा।

(8)

चलो एक ऐसी संख्या सोचो जिसे चाहे 4 से गुणा करें या उसमें 4 जोड़े। हल एक ही आएगा।

(9)

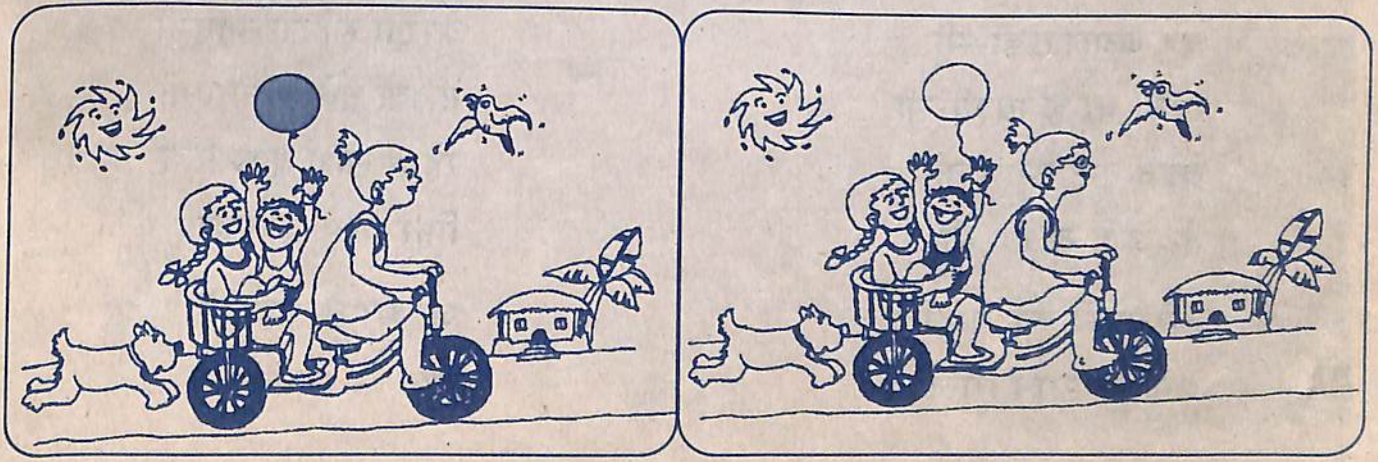

क्या तुम इन दोनों चित्रों में कम से कम 10 अन्तर ढूँढ सकते हो?

बादलों के मेले

कुछ उजले, कुछ काले
वर्षा के रंग निराले

बादलों के हैं मेले
पानी के जैसे थैले
बरस ही पड़ते हैं
हवाओं ने जो ठेले
साँवले, बड़े मतवाले
वर्षा के रंग निराले

ओली में हैं ओले
झोली में झकोले
उड़ जाएँगे गगन में
छाते जो तुमने खोले
बारिश में मस्ता लें
वर्षा के रंग निराले

धरती पर है पानी
आस्माँ का रंग धानी
इन्द्रधनुष फहरा कर
सूरज ने डोर तानी
किरनों के तीर चला ले
वर्षा के रंग निराले

बहे बयार ठंडी-सी
खेतों पर है खुशी-सी
बीज नन्हें उगने को
तैयार हैं कभी-भी
हरियाली को सम्हाले
वर्षा के रंग निराले

बरखा सहेली जाएगी
ठंडक नवेली आएगी
रहेगी साथ कुछ दिन
फिर गरमी सताएगी
जी भर के नहा लें
वर्षा के रंग निराले

● राजेश उत्साही
● चित्र : मयूर सरवैया

चकमक पंजीयन क्रमांक 50309/85 के अंतर्गत भारत के समाचार पत्रों के रजिस्ट्रार द्वारा पंजीकृत। डाक पंजीयन क्रमांक म.प्र./261/भोपाल/200

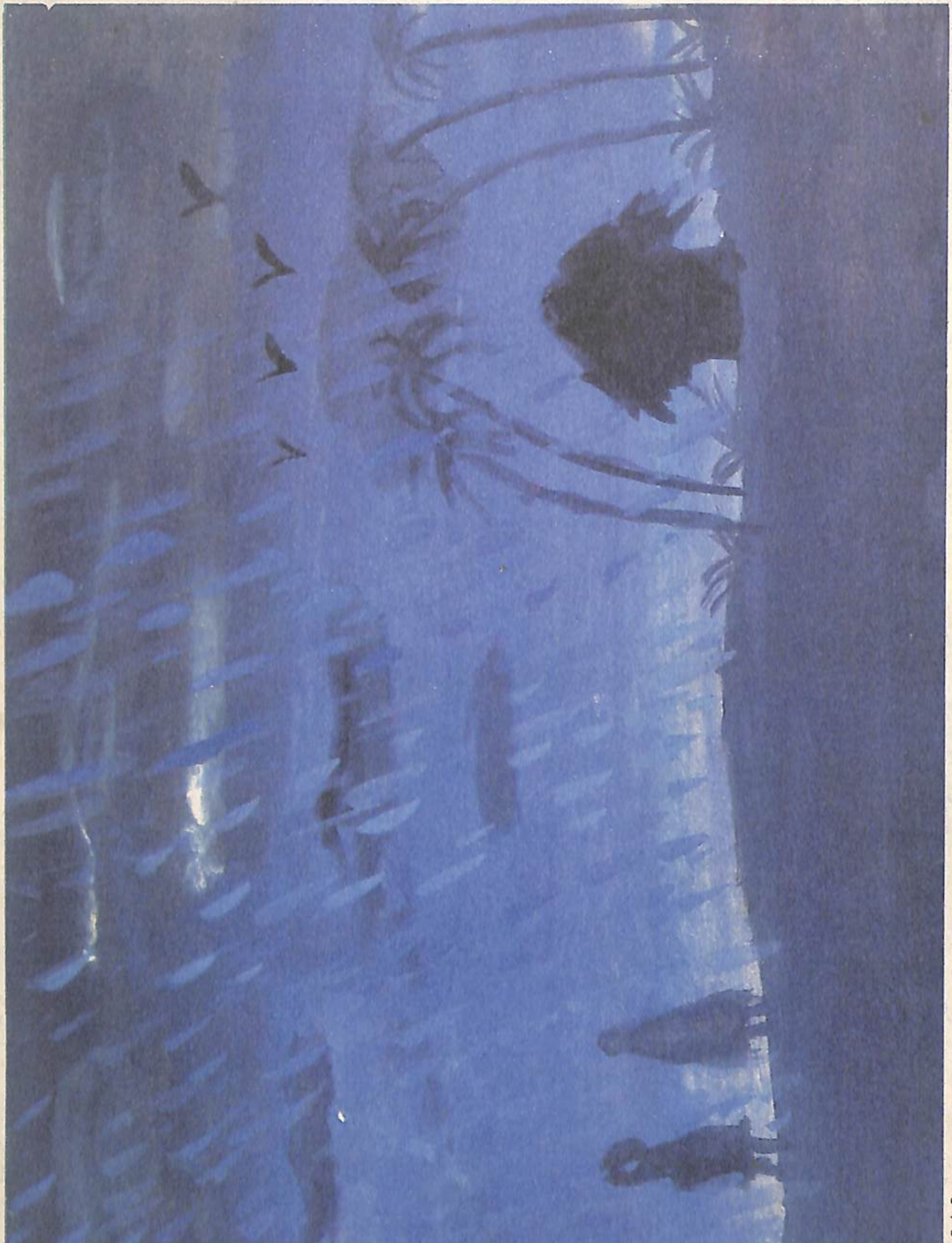

● केयूर के. त्रिवेदी, भावनगर, गुजरात

रेक्स डी. रोज़ारियो की ओर से विनोद रायना द्वारा राजकमल ऑफसेट प्रिन्टर्स, भोपाल से मुद्रित एवं एकलव्य, ई–1/25, अरेरा कॉलोनी, भोपाल 462 016 से प्रकाशित।
संपादक : विनोद रायना